Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 15 vad 04 30 vçSy 2016 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

बेचारा अन्नदाता

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

किसान कहने को अन्नदाता लेकिन खुद के परिवार के पोषण के लिए अन्न बचा नहीं सकता और अन्नदाता स्वंय बेचारा बन गया और आत्महत्या को मजबूर हो रहा है। ऐसे हालात ही क्यों पैदा हों जिससे अन्नदाता भूख से मर रहा है। कहीं हम फ्रांस की क्रांति की ओर तो अग्रसर नहीं हो रहे? स्मरण रहे कि राजा के हाथों त्रस्त जनता ने रोटी के लिए मुजाहिरा किया। विलासता की पराकाष्ठा में जीने वाली रानी ने फरमान जारी कर दिया किया कि रोटी नहीं है तो केक खाने को दे दो। अंततः फ्रांस में क्रांति हुई जिससे राज परिवार का सफाया और जनता को सुख की सांस। आज भी 27 जुलाई को फ्रांस की राजधानी पेरिस में रेलियां निकाली जाती हैं जो हुकमरानों को याद दिलवाती हैं कि अन्नदाता का अपमान ना हो।

आज संपूर्ण यूरोप के सभी 42 देशों की एक युनियन है जो बुआई के समय ही निर्धारित करती है कि कितनी जिंस उगाई जाए ताकि अनाज की अधिकता ना हो और कीमतें स्थिर रहें। ऐसे में किसान को खेत खाली रखने का मुआवजा दिया जाता है वो भी अपने देश की प्रादेशिक सरकारों की तरह दो रूपये या दस रूपये के चैक नहीं बल्कि प्रति हैक्टेयर पैदावार की औसत के बराबर। हां, वहां अब खेत का साईज बड़ा है। कृषि पर भारत की निर्भरता अभी भी 70 से 83 प्रतिशत जनता की है जबकि वहां किसानी पर निर्भरता केवल 8 से 10 प्रतिशत है। बाकी उद्योग कृषि उत्पाद हेतू मशीनरी या उत्पाद के प्रसंस्करण हेतू कार्यरत हैं। हमें भी कुछ ऐसा ही सोचना होगा कि उद्योग भी फले-फूले लेकिन कृषि को मारकर नहीं। इसको संरक्षण देना अति आवश्यक है ताकि अन्नदाता भी खुशहाल हो और दूसरे नागरिकों की तरह प्रतिष्ठा से जीवन यापन कर सके।

सबसे पहले किसान की लागत को ध्यान में रखकर ही उसके उत्पाद का मूल्य निर्धारित होना चाहिए। किसान की पैदावार का मूल्य निर्धारण आज भी किसी दूसरों के द्वारा किया जाता है। लगभग 90 से 170 दिनों में पैदा हुआ अनाज दुकानदार औने-पौने दामों पर खरीद कर उसका विक्रय मूल्य अपनी सुविधा अनुसार निर्धारित होता है। उदाहरणार्थ आलू की लागत इस वर्ष 40 से 45 हजार रूपये प्रति एकड़ रही, उत्पादन 150 बोरी निर्धारित कीमत 350 रूप्ये प्रति बोरी यानि करीब 50 हजार रूपये प्रति एकड़ किसी ने नहीं जाना कि इस लागत में 90 दिन की मेहनत अलग है जिसने मौसम की मार झेलकर उसी आढ़ती से ब्याज पर सामान लेकर लगाया है। उस दवाई या खाद को दाम में भी ब्याज और मनाफा पहले ही जुड़ा है। जब भयानक अकाल पड़ा जो कई वर्षों चला तब किसान की सुध ली गई। मुहावरा बना - "उत्तम खेती मध्यम व्यापार, निखिद नौकरी, मांगन भूल ना जा।" आज कुछ बावा केवल 8-10 वर्ष की अवधि में 1000-1200 करोड़ के मालिक। मंगते मालिक बन गए, नौकरपेशा हुकम चलाने वाले व तुगलकी फरमान जारी कर रहा है। व्यापारी मनमानी पर उतर आया। किसान और उपभोक्ता दोनो परेशान क्योंकि 3 रूपये किलोग्राम के हिसाब से खरीदा आलू एक सप्ताह में 20 रूप्ये का हो गया और किसान को अदायगी भी एक मास के बाद। यहीं हाल गेहूं का है। व्यापारी किसान का गेहूं लेते वक्त रूलाता है। खून पसीने से पैदा अनाज कई दिनों तक सड़कों पर बिखरा रहता है। सरकारी खरीद एजेंसियों से एक सप्ताह में भुगतान वह भी दुकानदार को, जो किसान को देगा एक महिने के बाद। जब किसान एक हफते के लिए कुछ लेता है तो उस पर ब्याज आयत होता है लेकिन किसान के अनाज का भुगतान करने में भी आढ़ती सरकारी पैसे को चक्र में डालकर कमाई करता है।

'k"k i`t&2 ij

'k"k i:t&1

वर्ष 2008 में 16196 किसान आत्महत्या को मजबूर हुए जिनमें से 150 केवल हरियाणा में। महाराष्ट्र में वर्ष 2004 में 4147, वर्ष 2005 में 3936, वर्ष 2006 में 4453, वर्ष 2007 में 4228, वर्ष 2008 में 3802, वर्ष 2009 में 2141, वर्ष 2011 में 3337, वर्ष 2012 में 3286 व वर्ष 2013 में 3146 व राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2009 में 17368, वर्ष 2010 में 15964 व वर्ष 2011 में 14027, इस प्रकार गत 20 वर्षों में 348538 किसान अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर गए यानि प्रति वर्ष औसत 16500 प्रतिदिन 46 यानि कि हर एक घंटे में 2 किसान अपनी तंगहाली की वजह से लोगों का भरण पोषण कर खुद इस भयावह अंत को मजबूर हो रहे हैं। अभी भी 61.9 प्रतिशत किसान राष्ट्रीय स्तर पर कर्ज के बोझ से लदे हुए हैं।

आज खेत को पानी नहीं क्योंकि आज 10 राज्य सूखे की चपेट में हैं। जनता पीने के पानी के लिए त्रस्त है। लातूर का उदाहरण देखिए, वहां पर पानी लेकर रेल पहुंची और उस पर भी राजनीति जो कि नीचता की परकाष्ठा नही ंतो और क्या है? सरकारें आज किसान को कुछ कर गुजरने के लिए बाध्य कर रही हैं। पीड़ितों को राहत में भी तुष्य राजनीति हो रही है। सरकार तो अंधी बहरी है ही, गैर सरकारी संस्थाएं भी ऐसी बेढंगी चाल चल रही हैं।

सामर्थ लोगों की करोड़ों के ऋण बट्टे–खाते डाले जा रहे हैं और किसान लाखों के ऋण से मर रहा है। अभी कुछ दिन पूर्व ही हिसार (हरियाणा) के गढ़ी गांव के किसान राजेराम ने केवल 5 लाख के ऋण के लिए जीवन लीला समाप्त कर ली। विजय माल्या 9000 करोड़ रूपये का ऋण लेकर चंपत हो गया। एक गाना आया था ''जिस देश में बचपन भूखा हो फिर उसकी जवानी क्या होगी''। इसी तरह ''जिस देश में अन्नदाता भूखा हो फिर उसकी प्रगति क्या होगी''। अगर आज हयुनसांग और मैगस्थनीज जैसे इतिहासकारों को यहां आना पड़ता तो भूख और बदहाली के सिवाय क्या लिखते? तक्षशिला और नालंदा के शिक्षा मंदिरों के देश में नोवी फेल उप मुख्यमंत्री मिल रहे हैं वे क्या मार्गदर्शन दे सकते हैं। केवल जंगल राज, जातिवाद, परिवारवाद, भाई भतिजावाद और भ्रष्टाचार क्योंकि इसी में वे पारंगत हैं।

आत्महत्याओं का मुख्य कारक हैं जो 2002 में उद्धित हो गए थे। फसल फेल 16.81 प्रतिशत, अन्य कारण 15.4 प्रतिशत, पारीवारिक समस्याएं 13.27 प्रतिशत, बीमारी 9.73 प्रतिशत, बेटी की शादी 5.31 प्रतिशत, राजनीति 4.42 प्रतिशत, जायदाद झगड़े 2.65 प्रतिशत इत्यादि। लेकिन इन मुद्दों में सुधार की तरफ कभी किसी का ध्यान हीं नहीं गया फिर घड़ियाली आंसू केवल कुर्सी तक निहित हैं? ताजा घटना है – प्याज की बंपर पैदावार हो गई है। दलाल 20 पैसे किलो में भी खरीदने को तैयार नहीं ताकि किसान मजबूरन इन्ही या इनसे भी कम दामों में बेचेने को मजबूर हो जाए। सरकार द्वारा समर्थन मूल्य घोषित करने तक बहुत देर हो जाएगी। एक छोटी सी पहल किसान को जीवन दे सकती है। कल सभी मंडी जाएं और केवल 5 किलो प्याज खरीद कर लाएं और पड़ौसी को भी ऐसा करने के लिए बाध्य करें। इससे मांग बढ़ेगी और व्यापारी उचित दाम पर खरीदने को मजबूर होगा। स्मरण रहे कि जापान में टुथब्रुश उद्योग रसातल में चला गया लेकिन जापान सरकार और लोगों ने निर्णय लिया कि हर घर रोजाना नया टुथब्रुश खरीदेगा। आज भी वहां सात दिनों का पैक्ट, अलग दिन का अलग रंग का पैक्ट निकलता है और पुराना रिसाईकिल कर वापिस साप्ताहिक बनाया जा रहा है जिससे उद्योग भी बच गया और राष्ट्रीय भावना भी। इसी तरह बिचौलियों को खत्म करके, हमें भी किसान का साथ देना है।

आज कृषि प्रधान देश का अन्नदाता आज कर्ज, मर्ज और दर्द से कराह रहा है। इसकी कोई सुध लेने वाला नहीं है। किसान आत्मसम्मान से जीने का आदि है। उसे भीख नहीं चाहिए। वह भूखे पेट मर सकता है लेकिन अपने आत्म सम्मान को कुचलता नहीं देखना चाहता। आज उसके नाम पर 6000 करोड़ के कर्ज माफी पर राजनीति हो रही है लेकिन उसकी राय जानने की किसी ने जरूरत नहीं समझी। उसे मुत में बिलजी–पानी के ढ़कोसले नहीं चाहिए। जरूरत है समुचित बिजली, पानी तथा उन्नत खाद–बीज की। वह किसी के रहमो–करम पर जीने का आदि नहीं है। किसान को अपने हाथों पर भरोसा है। वह अपनी मेहनत से रोटी कमा सकता है। मौसम की मार, कीट पतंगों की बहार के बावजूद सख्त मेहनत से उत्पादित अनाज का उचित भाव चाहिए लेकिन हो सब कुछ इसके विपरीत रहा है। किसान के खेत को सभी खाते हैं। मौसम अपने रंग दिखाता है। कीट–पतंगे फसल खाते हैं। नील–गाय, जंगली सुअर तथा बन्दर इत्यादि उसकी फसल को तहस–नहस करते हैं। लाल नकली खाद–बीज तथा कीटनाशक वह भी मनमाने भावों पर उपलब्ध करवाता है। खरपतवार फसल पर भारी पड़ते हैं। मजदूरों की कमी तथा जरूरतों में बढ़ोतरी उस पर भी धन की कमी किसान की कमर तोड़कर रख देती है।

किसान आज भी साहूकार के ऋण के नीचे दबा हुआ है। सरकार को दोनों पक्षों को निज़ात दिलाना होगा। अक्सर बुआई के मौसम में खाद–बीज की कमी हो जाती है। यह कमी व्यापारिक वर्ग की देन है ताकि वे किसान से मनमाना पैसा वसूल सकें। सरकार एक मूकदर्शक बनी खड़ी है। अपने खून पसीने की कमाई से दूसरों को अन्न उपलब्ध कराने वाला अन्नदाता आज खुद भूखा मरने की कगार पर है जबकि उसी के उत्पाद से एक रेहड़ी–फड़ी लगाने वाला आज उद्योगपति बन गया है क्योंकि उसे अपने उत्पाद की कीमत खुद तय करने का अधिकार है। अतः किसान को भी उद्योगपति की तरह अपने उत्पाद के दाम तय करने की छूट मिलनी चाहिए। सरकार अपनी नीति सुधारे, इसी में किसान और बैंक दोनों का हित है।

महात्मा गांधी ने अपने सपनों के भारत के लिए कहा था ''किसान की खुशहाली ही भारत की खुशहाली होगी''। आज के रहनुमा को तो केवल अपने हिस्से को हथियाने की होड़ है फिर चाहे किसान से उसकी धरती मां ही क्यों ना छीन रही हो। आज भारत की कृषि प्रधान अर्थ व्यवस्था पर 404 के आसपास विशेष

आर्थिक जोन क्षेत्र निर्माणाधीन हैं जो किसान के हितों पर कुठाराघात है तथा देश के लिए एक बदनुमा दाग है। कई वर्तमान सरकारों ने तो पूंजीपतियों विशेषकर भूमि हथियाने वाली कम्पनियों के मदद के लिए अप्रत्यक्ष रूप से सारे कायदे–कानून ताक पर रखते हुए अन्दर खाते अपने आप को अनुचित लाभ पहुंचाने तथा किसानों को बेघर करने का एक नया रास्ता अपना लिया है। बड़े आश्चर्य की बात है कि सार्वजनिक संस्थानों द्वारा कई साल पहले सार्वजनिक हित व विकास के लिए सस्ते दामों पर किसानों की अधिग्रहित की गई जमीन सरकारी तंत्र द्वारा सेज के नाम पर अपने नीजि हितों की सुरक्षा करते हुए अम्बानी जैसे पूंजीपतियों को स्थानान्तरित कर दी गई। यु0पी0ए0 काल में एच.एस.आई.डी.सी. द्वारा गुड़गांवा में अधिगृहित व विकसित की गई 1500 एकड़ जमीन अम्बानी ग्रुप को दे दी। इसी प्रकार से हिसार (हरियाणा) में कई वर्ष पहले मार्केटिंग बोर्ड द्वारा अधिगृहित की गई कोई 25 एकड़ भूमि मात्र 4 करोड़ में जिन्दल ग्रुप को स्थानान्तरित कर दी जबकि इस जमीन की मार्केट कीमत लगभग 500 करोड़ रू0 है। यमुनानगर (हरियाणा) में बड़े–बड़े पूंजीपतियों/क्लोनाईजर्स द्वारा सरकारी तंत्र व अपने राजनैतिक आकाओं के आर्शीवाद से हजारों एकड़ भूमि सरकार द्वारा अधिगृहण किये जाने का भय दिखाकर किसानों से सस्ते दामों पर खरीदकर आगे बड़ी–बड़ी कम्पनियों को मनमाने मंहगें रेट से बेचने के लिए सुरक्षित रख ली गई है। इसी प्रकार से अनेकों ऐसे उदाहरण हैं जिसके तहत सरकारी तंत्र द्वारा भोले–भाले किसानों की जीविका का साधन–भूमि को कौड़ियों के भाव खरीदकर अपने चहेते पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाने के लिए हस्तान्तरित किया गया है जो कि अन्नदाता का मुलतः अस्तीत्व खत्म करने के लिए उनके हितों पर सीधी कुठाराघात है। अतः लेखक यह कहने पर मजबूर है ''कहां छूपा कर रख दूं मैं अपने हिस्से की शराफत, जिधर भी देखता हूं उधर बेईमान खड़े हैं, क्या खूब तरक्की कर रहा है अब देश, देखिए खेतों में बिल्डर, सड़क पर किसान खड़े हैं।''

भारतीय प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष एम.वी.रप्पा मोईली के अनुसार चीन में मात्र छः सेज हैं। इकनोमिक पालिटीक्ल वीकली के अनुसार चीन के तीन सेज लगभग असफल हैं। मोईली ने स्पष्ट किया कि दस देशों में सेज नाकाम हो चुके हैं। केन्द्र सरकार के आंकड़ों के अनुसार इनसे 60 हजार एकड़ कृषि भूमि का खात्मा होगा। गैर सरकारी सुत्रों के अनुसार एक करोड़ 20 लाख एकड़ कृषि भूमि सेज का निवाला बन रही है। इस सेज की कृषि भूमि से 18 करोड़ जनसंख्या के लिए अन्न पैदा होता है। वर्णनीय है कि साढे नो प्रतिशत के विकास दर के कीर्तिमान का उपहास रोजगार में दो प्रतिशत की कमी और 12.5 प्रतिशत की दर की बेरोजगारी उड़ा रही है। आर्थिक विशेषज्ञों के अनुसार विकास की दर के कीर्तिमान से रोजगार में वृद्धि और मुल्य स्थिर रहने चाहिए थे परन्तु संप्रग सरकार के सतारूढ़ होने के बाद भारतीय खाद्य निगम के गोदामों से लाखों टन अनाज बिना सोचे–समझे विदेशों में बेच दिया और खुद विदेशी बाजारों से मंहगी दर पर आयात के लिए चल पड़े।

आज किसान, काश्तकार व खेतीहर मजदूर वर्ग दिशाहीन व असहाय होता जा रहा है और उनके हितों की पैरवी करने वाला कोई एकछत्र प्रवक्ता नहीं है। सरकार के उपेक्षापूर्ण रवैये से तंग होकर अगर यह संगठनहीन वर्ग अपने हक के लिए आवाज उठाने की कोशीश करते है तो उसको बलपूर्वक दबा दिया जाता है। नन्दीग्राम (पश्चिमी बंगाल), नोएडा (उ0प्र0), गुड़गांवा (हरियाणा) आदि की घटनायें बहुत से उदाहरण हैं जहां पर किसानों द्वारा अपने हक के लिए उठाई गई आवाज को बलप्रयोग से दबा दिया गया क्योंकि इस उपेक्षित वर्ग के हितों की आवाज उठाकर पैरवाई करने की किसी को कोई सुध नहीं।

देश में दालों का उत्पादन बढ़ा। सरकार ने बेरोक–टोक निर्यात की मंजूरी दे दी। दालों के भव चार गुणा बढ़ गये लेकिन किसान के हिस्से वही ढ़ाक के तीन पात। देश में हा–हाकार मचा। केन्द्र सरकार को मजबूरी में निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाना पड़ा लेकिन अन्दर खाते निर्यात चालू रखा गया। जिससे दाल महा घोटाले ने सनसनी पैदा कर दी। अब दाम बांधने के नाम पर दालें आयात कर एक असफल प्रयास किया गया लेकिन मंहगी विदेशी दालों से मंहगाई को और रफतार मिली। विशेषज्ञों के अनुसार चीनी–खाण्डसारी के मोर्चे की कहानी भी गेहूं–दाल घोटालों से अलग नहीं है। चीनी उत्पादन लक्ष्य से अधिक होने के आंकड़ों से तो कांग्रेस ने बाजार में चीनी के दामों में कमी को रोकने के लिए निर्यात की खुली छूट दी। चाहिए था कि सस्ती गेहूं–दाल, चीनी के महा भण्डार जमा करना लेकिन दोनों हाथ में लड्डू कैसे आते ?

केंद्रीय श्रम मंत्रालय की सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार कृषि पर आधारित वर्ग की संख्या घट कर आधे से कम यानि 45 प्रतिशत रह गई है और बड़ी संख्या में लोग खेती छोड़कर अन्य कार्यो में लग रहे हैं। गत दो दशक में कृषि योग्य जमीन में भूमि अधिग्रहण के कारण 28 लाख हैक्टयर की कमी आ गई है और अगर इसी तरह से किसानों की कृषि भूमि पर अधिग्रहण चलता रहा व किसान के इस पुस्तैनी धंधे में निरंतर घाटा चलता रहा तो कृषक वर्ग का अस्तित्व केवल कागजों में ही रह जाएगा और देश की कृषि व कृषि से संबंधित कार्यों पर आधारित 85 प्रतिशत जनसंख्या के भूखे मरने की नौबत आ सकती है जिससे समस्त राष्ट्र के विकास व व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। आज किसान के पास केवल एक से दो एकड़ तक की औसत जोत सीमित कर रह गई है और बेचारा अन्नदाता संसाधनों व दक्षता की कमी के कारण घाटे के इस धंधे को छोड़कर कोई अन्य कार्य करने में सक्षम नहीं है और अपने जीवन यापन व उत्थान के लिए सरकार की बेरूखी का सामना करने को मजबूर है।

इस साल राष्ट्र के 10 राज्यों में किसान–मजदूर सूखे और ऋण की समस्या से जूझ रहे हैं और सरकार ने अभी तक ग्रामीण रोजगार योजना के तहत 8261 करोड़ रूप्ये की मजदूरी और 3866 करोड़ रूप्ये की सामग्री का भुगतान नहीं किया है।

अकाल इतना भयानक है कि ना केवल किसान आत्महत्याएं करने लगे बल्कि देहात में पीने के पानी का भी एक गंभीर संकट पैदा हो गया है। सरकार ने राजस्व कमाने हेतू आई0पी0एल0 मैचों के दौरान लाखों रूपये तो केवल पानी पर ही खर्च कर दिए लेकिन गांव देहात में पीने के लिए पानी उपलब्ध करवाने की किसी को भी सुध नहीं है। बिहार, उत्तराखंड, राजस्थान, गुजरात, उड़िसा, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश आदि अधिकांश सुखाग्रस्त राज्यों मे सरकार सुखाग्रस्त क्षेत्रों व इसके कारण जन मानस व कृषि उत्पादन को हुए नुकसान के आंकड़े तक पेश नहीं कर पाई जिस पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी किसान, कामगार, मजदूर के हितों की अनदेखी पर नाराजगी जताई है। अगर समय रहते केंद्रीय व प्रदेश सरकारों द्वारा सुखा व अकाल जैसी प्राकृतिक विपत्तियों से बचाव के लिए आवश्यक कदम नहीं उठाए गए तो किसान मजदूर के साथ–साथ आम जनता के लिए भी खाद्यान्न की समस्या उत्पन्न हो जाएगी।

किसान–काश्तकार वर्ग की दयनीय अवस्था का पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री अरूण यादव द्वारा बजट सत्र में दिए गए इस वक्तव्य से भी अंदाजा लगाया जा सकता है कि वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार देश में कुल 40 करोड़ 22 लाख श्रमिक हैं जिनमें से 58 प्रतिशत से अधिक कृषि में समायोजित हैं लेकिन फिर भी इस क्षेत्र को ना तो मूल व्यवसाय में गिना जाता है और ना ही इसके लिए कोई अलग से बजट का प्रावधान किया जाता है। कृषि क्षेत्र में आज भी देश की आधे से अधिक आबादी निर्भर है और इसके विकास के लिए भारतीय कृषि सेवा जैसी कोई व्यवस्था की जानी चाहिए लेकिन अभी तक देश में किसान आयोग भी गठित नहीं हुआ है।

आज लगातार बढ़ रहीं कृषि उपज के लागत मुल्यों व अपर्याप्त फसल मूल्यों के कारण किसान कामगार को दयनीय व बदतर हो रही आर्थिक हालत से उभारने के लिए आम नागरिक विशेषकर बुद्धिजीवियों, अर्थशास्त्रियों को आगे आने की जरूरत है। कामगार तथा काश्तकार की दशा सुधारने के लिए समस्त कल्याणकारी योजनाओं को दुरूस्त करके अधिक प्रभावी व सुचारू रूप से चलाने की आवश्यकता है। निरंतर उपेक्षित हो रही कृषि व्यवस्था को उभारने के लिए उद्योगों की तर्ज पर अलग से राष्ट्रीय कृषि आपदा कोष स्थापित करके कृषि से जुड़े समस्त वर्गों को आर्थिक सहायता मुहैया करवाई जानी चाहिए ताकि आज पूर्णतया पिछड़ चुके किसान, काश्तकार व कामगार वर्ग की आर्थिक दशा को सुधार कर राष्ट्र को भुखमरी के अंदेशे से बजाया जा सके। इसके साथ ही किसान को सत्ता में अपनी भागीदारी बनाकर अपने मत की कीमत का पता लगाना होगा। किसान तभी बचेगा, उसका खेत बचेगा, जिससे उसकी रोजी रोटी बचेगी और राष्ट्र का विकास होगा।

प्रत्येक राज्य में गुजरात की तरह भूमि की मार्केट कीमत तय करने के लिए सैंटर फार एनवायरमैंटल एण्ड टैक्नोलाजी यूनिवर्सिटी (सीईपीटी) स्थापित की जानी चाहिए। इसके इलावा किसानों को कारखानों के लिए विकसित किए गए प्लाटों पर तय की गई कीमत का 10 प्रतिशत हिस्सा भी दिया जाना चाहिए। अधिग्रहित जमीन के उपर चलाए जाने वाले प्रस्तावित कारखानों के अंदर किसानों को नौकरी के साथ–2 उनके परिवार के एक सदस्य को 2 से 5 साल तक मुफत व्यवसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए और सरकार द्वारा अधिग्रहित भूमि की कीमत का 5 प्रतिशत हिस्सा गांव की सार्वजनिक सुविधा जैसे कि स्कूल, हस्पताल, गलियां, सड़कें, कम्युनिटी सैंटर व सुलभ सुविधाओं के उपर खर्च किया जाना चाहिए। संपूर्ण राष्ट्र के लिए एक जनहित एवं किसान, कामगार व काश्तकार के कल्याण एवं उत्थान पर आधारित सामूहिक निष्पक्ष एवं विकसित अधिग्रहण नीति निर्धारण करने की आवश्यकता है।

किसान की भूमि अधिग्रहण से होने वाले संभावित नुकसान की भरपाई के लिए केंद्रीय स्तर पर किसान राष्ट्रीय आयोग स्थापित किया जाना चाहिए जिससे किसान मजदूर को हर संभव सहायता के प्रावधान किए जाने चाहिए। इसके इलावा राष्ट्रीय स्तर पर किसानों के हितों के लिए राष्ट्रीय किसान रक्षा संगठन आयोग गठित किए जायें जोकि समय–समय पर किसानों के हितों के लिए आवाज उठा सकें क्योंकि वर्तमान में किसानों की आवाज बुलंद करने वाला इस प्रकार का कोई संगठन स्थापित नहीं है। किसान संगठन आयोग में किसानों के प्रतिनिधियों को शामिल किया जाना चाहिए व किसानों के लिए उनकी अधिग्रहित भूमि का मुआवजा निर्धारित करने के लिए किसान प्रतिनिधियों की राय ली जानी चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि किसी भी किसान की कृषि योग्य भूमि अधिग्रहित न की जाए और सरकार की मनमानी व भाई भतिजावाद 'पिक एंड चूज' की नीति को बंद किया जाना चाहिए।

इसके साथ ही किसान की कृषि उपज लागत का आंकलन करके उचित मूल्य निर्धारण करने वाली स्वामी नाथन रिपोर्ट को यथाशीघ्र लागू किया जाना चाहिए और किसान द्वारा अपनी कृषि भूमि पर उगाए जाने वाले वृक्ष (सफेदा पापूलर आदि) का भी सरकारी मूल्य निर्धारित किया जाना चाहिए क्योंकि खेती बाड़ी के साथ–2 किसान द्वारा उगाए जाने वाले वृक्ष भी उसकी आजीविका का मुख्य हिस्सा है। प्राकृतिक आपदाओं से खराब हुई फसल का तुरंत मुआवजा देने के साथ–2 अगली फसल के लिए खाद बीज, कीटनाशन व अन्य आवश्यक कृषि उपकरण रियायती दर से किसान को उपलब्ध करवाने के लिए स्थाई तौर पर किसान राहत नीति बनाई जानी चाहिए ताकि पहले से ही आर्थिक बोझ में दब रहे किसान–कामगार को राहत मिल सके।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस.;सेवा निवृत,
प्रधन जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

हरियाणा के गठन की स्वर्ण जयंती

–सूरजभान दहिया

भोलेनाथ का भोले हरयाणवियों का हरयाणा। –इस प्रदेश का नाम हर यानि शिव–महादेव से जुड़ा हुआ है। हर ढाणी, हर गांव, हर नगर और हर कहीं इस प्रदेश में प्रायः शिव–पार्वती के घूमते हुये आपसी संवादों की भरमार है। शिवालयों के अलावा शायद ही कही और किसी देवता का मंदिर (प्राचीन) इस इलाके में मिले। यहां की लोकभाषा में मंदिर का नाम ही ''शिवालय'' है। पुराणों में शिव का वाहन बैल माना गया है। खेती प्रधान होने के कारण यहां खेती, तथा सवारी दोनों में बैल का ही वाहन चलता है। हर का यान (बैल) की यहां के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में इतनी प्रधानता होने के कारण ही इस प्रदेश का ''हरयाणा'' नाम चालू रहा, हरियाणा इस प्रदेश का द्योतक नहीं हो सकता।

मानव जाति का आविर्भाव सर्वप्रथम यही हुआ और यहां की ही पावन नदियों– सरस्वती एवं हषद्वती की घाटियों में राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना जागृत हुई। इसी भूखण्ड ने साहित्य सृजन के प्रथम प्रयास को देखा जो परवर्तीकाल में वैदिक साहित्य के सुरक्षित उद्यान के रूप में प्रफुल्लित हुआ और यहां पर शुद्ध, भव्य तथा गरिमापूर्ण जीवन के लिए मानव की प्रारंभिक आकांक्षाएं उत्कृष्ट सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक संस्थाओं के रूप में मूर्तिमयी हुई।

हरयाणा जहां वैदिककाल में यज्ञों की स्थली, विद्वानों की लीलाभूमि और अनेक इतिहास प्रसिद्ध वीरों की जन्मभूमि रहा है वहां विदेश से आने वालों आक्रांताओं का भी लगातार सदियों तक इसने जमकर मुकाबला किया है। मुस्लिम आक्रांताओं के समय भी यह कई सौ वर्षों तक बराबर युद्धस्थली बना रहा, खून की होली खेलता रहा। दिल्ली की तलहटी में बसा होने के कारण प्रत्येक विदेशी शासन ने इसे कुचलने की कोशिश की, किंतु इसकी अल्हड एवं अदम्य साहस वाली जवानी ने कभी झूकना नहीं माना। मनु महाराज ने लिखा है कि कूच करते समय इस प्रदेश के सैनिकों को ही आगे रखना चाहिये। अंग्रेजी शासन ने इस प्रदेश की इस गौरवपूर्ण विरासत को समझा। गत शताब्दी के दोनों विश्व युद्धों में युद्ध क्षेत्र में हरयाणा भूमि के वीरसपूतों ने अक्षय क्रीति कमाई है।

यद्यपि प्राचीन भारतीय परंपरा में हरयाणा प्रदेश को आदि–सृष्टि की जन्मभूमि माना गया है, परंतु अंग्रेजी शासनकाल में इसने अपनी पारंपरिक गण व्यवस्था को जीवित रखने के लिए कड़ा संघर्ष किया एवं अनंत अपेक्षाओं को झेलना पड़ा। जब 1857 में यहां के हल उठे–किसानों ने अपनी नियति का स्वयं निर्धारण करने का पवित्र संकल्प लिया तो यही से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का श्रीगणेश हुआ। खापों के नगाड़ों से लालकिले पर एक उद्घोष हुआ– 'खल्क खुदा का, मुल्क बादशाह का, अमन अवाम का'। इससे पूर्व अंग्रेजी हुकूमत की शोषणता के विरूद्ध बांके दयाल के गीत ''पगड़ी संभाल–ओ जट्टा' ने किसानों में जनक्रांति शुरू करने के लिए आत्मबल व आत्मसम्मान की भावना जागृत कर दी थी। भारत की स्वतंत्रता का यह पहला संग्राम ब्रिटिश हुकूमत की बड़ी ताकत और अनेक दलालों–चाटूकारों की साजिश के आगे भले ही उस वक्त अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच सका लेकिन कठिन और प्रतिकूल स्थितियों के बावजूद यहां के क्रांतिकारियों ने देश में स्वाधीनता, राष्ट्रीय और जातीय एकता की एक ऐसी मशाल जला दी, जो बाद के संघर्षों का लगातार मार्गदर्शन करती रही।

हरयाणा ने इस संग्राम की भारी कीमत चुकानी पड़ी। इस प्रदेश को अंग्रेजों ने टुकड़ों में बांटकर भारत के मानचित्र से गायब कर दिया और यहां के लोगों पर एक लंबा दमन चक्र चला। हरयाणा पुनः भारत के मानचित्र पर 1966 में उदित हुआ और 2016 हरयाणा की पुनः स्थापना का स्वर्ण जयंती वर्ष है। पचास साल पहले जब यह प्रांत अस्तित्व में आया तो अनेक अर्थशास्त्रियों एवं राजनीतिक विश्लेषकों का मत था कि यहां बुनियादी संसाधनों का अभाव है। अतएव यह प्रदेश ज्यादा समय तक अपने स्वक्तं अस्तित्व को रखने में समर्थ नहीं रह पायेगा। परंतु प्रदेश के समर्पित व दृढ़ संकल्पित नेतृत्व तथा कर्मठ प्रांतवासियों ने इस छोटे से प्रांत को एक दशक में ही एक प्रगतिशील भारत का प्रदेश बना दिया। पानी के अभाव वाले इस रेतीले क्षेत्र में हरित क्रांति का सूत्रपात हुआ, हरेक गांव को पक्की सड़क से जोड़ा, हरेक गांव में बिजली पहुंची तथा हरेक गांव को पेयजल की सुविधा मिली। यही नहीं यहां पर हाई–वे–टूरिज्म का एक अनूठे प्रोज्कट को क्रियांवित किया गया तथा देश–विदेश में लघु रमणीक होता है' की अनुभूति से हरयाणा को जोड़ा गया।

बहुमुखी विकास की नयी दिशाओं, नए क्षितिज और नये–नये गंतव्यों की ओर सत्वर' गति से अग्रसर है अपना हरयाणा। अलबत्ता कुछेक ऐसी समस्या अभी भी प्रदेश की सम्यक उन्नति में बाधा बनी हुई हैं। हरयाणा की अपनी राजधानी नहीं बनी, इससे भौतिक प्रगति के बावजूद सांस्कृतिक क्षेत्र में शुन्य है हरयाणा। इस पावन भूमि ने बीसवी सदी में भक्त फूलसिंह जैसे महात्मा, चौधरी पीरू सिंह जैसे कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता, लाला हरदेव सहाय जैसे गोभक्त, श्री ठाकुरदास भार्गव जैसे कानूनदां एवं पार्लियामेंटोरियन, पंडित दीनदयालु जैसे व्याख्याता, सर छाजूराम सेठ जैसे सात्विक दानी, दीनबंधु छोटूराम जैसे किसान मसीहा, डा. रामधन सिंह जैसे विश्व विख्यात कृषि वैज्ञानिक, दादा लख्मीचंद जैसे सांग सम्राट, कल्पना चावला जैसे एस्ट्रोनोट तथा सायना नेहवाल जैसी बैडमिंटन क्वीन पैदा की हैं। फिर भी हरयाणयत को धनाढ्य करने के लिए आज कोई व्यक्तित्व यहां नजर नहीं आ रहा है। अब भी यहां की बेटी को शिकायत है :

''म्हारे जनम में बाज्जै ठेकरे भाई के में थाली।
बुढ्ढा भी रौवे बुढिया भी रौवे, रौवे हाली पाली।।''

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' की जो चौथी पानीपत की लड़ाई शुरू हुई थी, उसका परिणाम अब तक नहीं आ सका है।

बोहर के प्रसिद्ध मठ के संस्थापक बाबा मस्तनाथ की आयु पानीपत की तीसरी लड़ाई सन् 1761 में 100 वर्ष की थी। उनके जीवन चरित्र में लिखा है–

''देश अनूप एक हरियाना, दूध दही घृत का जहां खाना।
बसंत कुशल जहै हरिजन गेहू, राखत अधिक साधु पदनेहु।।

दया, धर्म अरू भक्त रसीले, लोग अहिंसक बहुत सुशील।
केसरी हरे एकनगर सुहावन, रोहतक जिला माहिं अति पावन।।

परंतु हाल ही में जो इस प्रदेश में मिस–हैपनिंग हुई उससे यहां के सामाजिक ताने–बाने पर गहरा आघात हुआ है। अब छत्तीस बिरादरी की नियति एक विडंबनामयी मुस्कान की रेखा के साथ यहां छिपने के लिए जगह ढूंढती फिरती है। हरयाणा ने अनेक उत्थान–पतन देखे हैं और छत्तीस बिरादरी के भाईचारे ने अनेक पीड़ाओं को झेला है। हरयाणयत में ऐसी आंतरिक शक्ति है जो इन पीड़ाओं को भी सहन करके उज्जवल हरयाणा के लिए एकजुट होकर कार्यशील रहेगी। हरयाणा की स्वर्ण जयंती की बेला पर इसी शुभ कामना के साथ.. ।

भगत सिंह बेकसूर थे - 85 साल बाद लाहौर कोर्ट में चुनौती

भगत सिंह का केस लड़ने वाले इम्तियाज कुरैशी से बातचीत के अंश

लाहौर के इम्तियाज कुरैशी ने हिंदुस्तान के हीरो भगत सिंह को फांसी देने के 85 साल बाद फैसले को कोर्ट में चुनौती दी है। पिछले महीने लाहौर कोर्ट में इसकी सुनवाई हुई। अदालत ने पांच जजों की बंच में ट्रायल के निर्देश दिए हैं। मामले की पैरवी इम्तियाज के वालिद अब्दुल राशिद कर रहे हैं। जब इम्तियाज से पूछा कि पाकिस्तानी होते हुए आप भारत के हीरो की लड़ाई क्यों लड़ रहे हैं? तो उनका जवाब था– 'भगत सिंह हिंदुस्तान का हीरो है, पर पाकिस्तान का तो बेटा है। उनका जन्म पाकिस्तान के पंजाब में हुआ था। उन्हें सिर्फ हिंदुस्तानी मत कहिए...।' प्रस्तुत है फोन पर उपचिता भास्कार से हुई पूरी बातचीत के अंश...

• इस लड़ाई की शुरुआत कहां से हुई?

बात 2013 की है। घर में एक दिन भगत सिंह का जिक्र आया। वालिद और दादा पहले भी कई दफा उनकी कहानियां सुना चुके थे। तभी हमने फैसला किया भगत सिंह की फांसी का सच पता लगाएंगे। इसके बाद पीआईएल लगाने का फैसला किया।

• फिर क्या हुआ?

मेरे वालिद सुप्रीम कोर्ट में एडवोकेट हैं। मैंने अर्जी लगाई, उन्होंने पैरवी की। पहली सुनवाई 24 मई 2013 को हुई। इससे कुछ 15–20 दिन पहले ही हमने अर्जी लगाई थी। शुजात अली खान जज थे।

• क्या अब तक की ये लड़ाई आसान रही है?

बिल्कुल नहीं। जब हमने मुकदमा दायर किया तो हमारे ही लोग सामने आए। धमकियां दी। कहा गोलियों से भून देंगे। कुचलवा देंगे। मालूम भी नहीं चलेगा। फिर हमने फाउंडेशन बनाया। भगत सिंह मेमोरियल फाउंडेशन। शोर किया पूरे पाकिस्तान में। रैलियां, प्रोटेस्ट, धरने सब दिए। हम डरे नहीं।

• इस दौरान सबसे चौकाने वाली बात क्या रही?

हम दुनियाभर में मौजूद पाकिस्तानियों, हिंदुस्तानियों से सबूत जुटा रहे थे। 2014 में हम वो एफआईआर निकाल लाए जिस केस में भगत सिंह को फांसी दी गई थी। पता चला कि उस एफआईआर में तो भगत सिंह का नाम ही नहीं था। और तो और रजिस्ट्रार के फैसले पर ही फांसी चढ़ा दिया गया। जबकि रजिस्ट्रार के पास ऐसा कोई अधिकार होता ही नहीं है। हमने अपने केस में यही दलीलें दी हैं।

• कितना जानते हैं भगत सिंह को? और आज फैसला आ भी जाए तो इससे होगा क्या?

मैं केस दाखिल करने के बाद दो बार भारत आया। भगत सिंह के परिवार से मिला। वो हमारी मेहनत से बहुत खुश हैं। मेरी भगत सिंह के रिश्तेदार सरदार सुखविंदर सिंह से फोन पर बात हुई, लगातार राता रहता है। मैंने भगत सिंह को पढ़ा है, बचपन से ही। अगर नवाज शरीफ और नरेंद्र मोदी वाकई दोनों देशों के बीच दोस्ती को लेकर संजीदा हैं तो भगत सिंह को आधार बना लें। कॉमन हीरो मिलेगा तो खुशहाली आ सकती है।

• तो अब इस केस में क्या हो सकता है?

तीन फरवरी को सुनवाई हुई थी। दो जजों के बेंच ने सुनवाई की। हमने कहा, भगत सिंह को फांसी सुनाने वाली बेंच कैसे उसकी सुनवाई कर सकती है। कोर्ट ने हमारी बात मानी। अब केस चीफ जस्टिस को भेजा गया है। पांच या उससे ज्यादा जजों की बेंच बनाने को कहा गया है। हम आगे पता करेंगे। दुनियाभर में बसे हिंदुस्तानी और पाकिस्तानी अगली सुनवाई के लिए पाकिस्तान आएंगे। वादा किया है।

• इस पूरी लड़ाई से आप जताना क्या चाहते हैं?

यही की मुसलमान तंगनजर नहीं है। वह हीरो का अहतराम करता है। फिर चाहे वह हीरो किसी भी मजहब से ताल्लुक क्यों न रखता हो।

• कैसा इंसाफ दिलाएंगे आप भगत सिंह को?

हम ये साबित करेंगे कि भगत सिंह को फांसी देने का ब्रिटिश हुकूमत का फैसला गलत था। बेगुनाह को सूली चढ़ाया गया। इसके लिए उन्हें भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु के परिवार से माफी मांगनी होगी। हिंदुस्तान से और पाकिस्तान से भी। महारानी विक्टोरिया ने जलियांवाला बाग के लिए माफी मांगी थी। वैसे ही इनसे भी मांगें। हम चाहेंगे दोनों देशों को ब्रिटिश हुकुमत हर्जाना भी दे।

• पाकिस्तान में जो हालात हैं उनमें किस इंसाफ की उम्मीद की जा सकती है?

हम आजाद मुल्क हैं। यहां की अदालतें भी इंसाफ करती हैं। हम दुनिया को यही मैसेज देना चाहते हैं। पहले केस में देरी आ रही थी। फिर मेरे वालिद एडवोकेट अब्दुल राशि कुरैशी ने गुस्सा किया। हमें जल्दी तारीख मिली। भरोसा रखिए इंसाफ जरूर होगा।

• आप पाकिस्तान से हैं और भगत सिंह हिंदुस्तानियों के हीरो, कभी अजीब नहीं लगा?

भगत सिंह तो जितने हिंदुस्तान के हैं, उतने ही पाकिस्तान के भी। भारत का वो हीरो है, हमारा तो बेटा है। उनका जन्म पाकिस्तान में हुआ था। उन्हें सिर्फ हिंदुस्तानी न कहिए...। मेरे पूर्वज भी आजादी के लिए लड़े थे।

वो हरियाणे के सिरसा में बाबा गुलाब शाह की मजार है ना, वो मेरे ही फोरफादर हैं। हिंदू मुसलमान सब उन्हें बड़ा मानते हैं।

(दै. भास्कर से साभार)

कैश, कास्ट, कम्युनल और क्रिमिनल है आज की राजनीति

–प्रो. दुर्गपाल सोलंकी

आगरा। ''भारतीय राजनीति का चरित्र अब असहिष्णु हो गया है। राजनीति में अब विरोधी नहीं रहे। अब या तो शत्रु होते हैं या फिर जबरदस्त समर्थक। देश की लोकशाही में आज योग्यता बाधा है। योग्यता और प्रखरता को खतरे की तरह लिया जाता है। नेता के मायने 'कैश, कास्ट कम्युनल और क्रिमिनल' में बदल गये हैं। अब राजनीति की गुणवत्ता नेता पर लगे मुकदमों, घोटालों व सीबीआई जांचों में देखी जाती है। राजनीति में बार–बार समझौते करने पड़ते हैं और यही बड़ी गलती है। राजनीति नेतृत्व शून्य हो गई है क्योंकि विचार नहीं है। राजनीति की वर्तमान परिपाटी को बदलना आज की महत्ती जरूरत है जिसमें युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो।''

उक्त विचार शिक्षाविद राजनीतिक विचारक, विश्लेषक एवं संसदीय चुनाव विशेषज्ञ डॉ. दुर्गपाल सिंह सोलंकी ने 'भारतीय राजनीति में उत्तर प्रदेश की भूमिका' विषय पर सर छोटूराम स्मृति शिक्षण कक्ष में संपन्न विचार–संगोष्ठी में व्यक्त किये।

प्रो. दुर्गपाल सिंह ने कहा कि प्रदेश ने महान क्रांतिकारी राष्ट्रपति राजा महेंद्र महेंद्र प्रताप, पं. जवाहर लाल नेहरू, रफी अहमद किदवई, लाल बहादुर शास्त्री, गोविंद बल्लभ पंत, चौ. चरण सिंह, डा. हृदयनाथ कुंजरू, बाबू गुलाब राय, प्रकाशवीर शास्त्री, डा. संपूर्णानंद, आचार्य नरेंद्र देव, राजनारायण, वीरेंद्र वर्मा, डा. ऊधम सिंह, पं. दीन दयाल उपाध्याय, ठा. ब्रजराज सिंह, पं. कृष्णदत्त पालीवाल, पं. मदन मोहन मालवीय, कुंवर पुष्कर सिंह, कमांडर अर्जुन सिंह भदौरिया, अटल बिहारी वाजपेयी प्रो. शिब्बनलाल सक्सेना जैसे नेता दिये हैं। मुंशी प्रेमचंद, सुमित्रानंदन पंत, डा. राम विलास शर्मा, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, हरिवंशराय बच्चन, राजा लक्ष्मण सिंह, समाजसेवी दानवीर जमींदार ठा. नारायण सिंह, पं. हरिशंकर शर्मा, प्रखर प्रशासक ठा. दलीप सिंह, इतिहासकार डा. ईश्वरी प्रसाद व डा. आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव, साहित्यकार डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी, सत्यनारायण कविरत्न, डा. नत्थन सिंह, अमृतलाल नागर, डा. शिवमंगल सिंह जैसी विभूतियों का भी इस भूमि से ताल्लुक रहा है। इसके बाद भी यदि गंगा के किनारे से युमना के तट तक भारतीय राजनीति का स्वरूप बिगड़ा है तो इसका कारण मूल्यों का ह्रास है। युवा तुर्क रहे पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चंद्रशेखर ने आपातकाल के अनुभवों पर 'जेल की डायरी' लिखी किताब में लिखा है कि राजनीति या तो भ्रष्टाचारी को सुख देती है या फिर शत्रु का नाश कर देती है।

डा. दुर्गपाल सोलंकी ने कहा कि आज राजनैतिक प्रतिद्वंदिता गैंगवार में बदल चुकी है। जब सत्ता में होता है, वह व्यवस्था को अपने राजनैतिक विरोधियों के लिए नकेल के तौर पर इस्तेमाल करता है। नेताओं को आलोचना करने की आदत हो गई है, लेकिन सहने की आदत नहीं रही है। इंदिरा गांधी तक विरोध की मर्यादाएं थी, लेकिन आज नहीं हैं। हम अतीत की बात करते थकते नहीं हैं, लेकिन वर्तमान का आंकलन करने से डरते हैं।

मुख्य अतिथि एवं मां गायत्री शिक्षा योग संस्थान, पूर्वांचल के अध्यक्ष ठाकुर भगवती प्रसाद सिंह ने अपने सारगर्भित संबोधन में कहा कि समाजवादी नेता एवं विचारक डा. राम मनोहर लोहिया पं. नेहरू के खिलाफ चुनाव इसलिए लड़ते थे क्योंकि वे विरोध को एक ताकत देना चाहते थे। डा. लोहिया ने अपना जीवन विपक्ष की राजनीति को ओजस्वी बनाने में लगा दिया। अब जाति, धन, बाहुबल, संप्रदाय, चरित्र हनन आदि नेताओं के साधन राजनीति के नायक हैं। श्री भगवती जी ने कहा कि सिर्फ गंगा–यमुना को राजनीति में खराबी के लिए दोष नहीं देना चाहिए, बल्कि इसमें दक्षिण भी कम दोषी नहीं है। अतः आवश्यकता और समय की पुकार है कि विशुद्ध राजनीतिक विचारधारा पर आधारित राजनीतिक दल की स्थापना हो जो वर्तमान भारतीय राजनीति को नई दिशा देकर जन–जन की आकांक्षाओं को पूरी करे, तभी नया हिंदुस्तान बन सकेगा। राजा महेंद्र प्रताप मिशन, वृंदावन के महासचिव राजेंद्र प्रताप सिंह प्रेमी ने कहा कि देश में युवाओं की आबादी 54 करोड़ के लगभग है। इस शक्ति को राष्ट्र निर्माण की दिशा में जोड़ा जाये तो समृद्धशाली राष्ट्र के निर्माण की दिशा में हम आगे बढ़ सकते हैं। अखिल भारतीय जाट आरक्षण संघर्ष समिति के राष्ट्रीय महासचिव प्रधानाचार्य बीरपाल सिंह ने कहा कि आज युवाओं के आदर्श क्रिकेटर और फिल्म स्टार हो गए हैं। ये आदर्शों का भटकाव है। युवाओं को सही दिशा व मार्गदर्शक की भूमिका हमें देनी होगी। समाजवादी विचारक डा. दौलत राम चतुर्वेदी ने कहा कि आज हमारे कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा तो मिल रही है, लेकिन विद्या नहीं। हमें शिक्षा और विद्या का समन्वय कर मूल्य आधारित शिक्षा देनी होगी, तभी राजनीति के क्षेत्र में युवाओं की स्थिति मजबूत होगी। किशोरीमण पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, मथुरा के राजनीति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुधीर प्रताप सोलंकी ने कहा कि ज्ञान केवल भारत के पास है और सन 2020 तक हमारा देश पूर्ण स्मृद्ध होकर जगत गुरू बनेगा। प्राध्यापक जतीन उपाध्याय ने कहा कि हिंदुस्तान अपने शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों का निर्माण करता था, आज मैनेजरों का उत्पादन कर रहा है। हमें नगर–नगर और गांव–गांव जाकर अशिक्षा और कुरीतियों के खिलाफ लोगों हो जाग्रत करना है, तभी राजनीतिक क्षेत्र में उत्साही एवं समर्पित कार्यकर्ता आ सकेंगे। समाजसेवी राजेश पचौरी ने कहा कि युवा तन का नहीं, मन की अवस्था का नाम है। जिस व्यक्ति में देश के प्रति कुछ करने की चाह होती है, वही युवा है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तेज सिंह वर्मा ने कहा कि राजनीति से नीति नदारद, रह गया केवल राज, अपनी–अपनी धुन पर बजा रहे, अपने–अपने साज। जब तक राज नेताओं में सेवा ओर समर्पण का भाव नहीं जगेगा, तब तक भारत का भाग्योदय मुश्किल है। अतः राजनीति में परिवर्तन जरूरी है। इतिहासविद कुंवर अरुण प्रताप 'चमन' ने व्यंग्य करते हुए कहा कि– नेता को बादाम, जनता को मूंगफली, नेता को मिठाई, जनता को गुड़ की डली, अब तो बंद होनी चाहिए ये रीति, राजनीति आखिर कब बनेगी सेवा नीति? अतः अब नये राजनैतिक संगठन की परम आवश्यकता है।

अध्यक्षीय संबोधन में वरिष्ठ शिक्षाविद डा. महीपाल सिंह ने कहा कि युवा अपनी शक्ति को पहचानें। राजनीति के नाम पर होता अब व्यापार, सेवा तो करनी नहीं, जेब खाली करे सरकार। युवाओं के आदर्श राजा महेंद्र प्रताप, भगत सिंह, महाराणा प्रताप, दीनबंधु सर छोटूराम, रानी लक्ष्मीबाई, महर्षि दयानंद सरस्वती, छत्रपति शिवाजी, वीर गोकुला, गुरू गोविंद सिंह, विवेकानंद जैसे महापुरुष होने चाहिएं। ये सर्वदा सार्थक एवं प्रासंगिक रहेंगे। इनके आदर्शों–विचारों के आधार पर ही हमारे युवा राजनीति में कीर्तिमान स्थापित कर सकेंगे।

शहीदे आजम भगत सिंह को श्रद्धासुमन

–सूरजभान दहिया

देश के युवाओं के लिए सूर्यशक्ति भगत सिंह सदा प्रेरणा स्रोत रहेंगे–आज भी, कल भी और हां, भूतपूर्व युवाओं के भी वे श्रद्धेय थे क्योंकि उनके जीवन से यह सत्यापित होता है कि जिस ओर जवानी मुड़ती है उधर ही इतिहास मुड़ जाता है। उन्होंने गांधी जी के असहयोग आंदोलन की असफल होते देखा उस समय वे नेशनल कालेज, लाहौर के विद्यार्थी थे। वे गांधी जी के स्वतंत्रता आंदोलन की प्रक्रिया से सहमत नहीं थे, वे प्रगतिवादी विचारधारा के युवक थे। उनका मानना था कि ब्रिटिश राज की समाप्ति केवल हिंसक क्रांति से हो सकती है। सन् 1923 में वे हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन में सम्मिलित हो गये तथा मार्च, 1926 में उन्होंने लाहौर में नौजवान भारत सभा का गठन किया। इस सभा का उद्देश्य युवों में क्रांतिकारी विचारधारा का प्रवाह करना था।

प्रगतिवादी विचारधारा भगत सिंह में आर्य समाज के प्रभाव से पनपी। उन्होंने लाहौर के डीएवी स्कूल में शिक्षा पाने के लिए प्रवेश लिया जिसे ब्रिटिश सरकार क्रांतिकारी युवा पौध उत्पन्न करने की नर्सरी मानती थी। सामाजिक बदलाव लाने के लिए संघर्ष करने की भावना भगत सिंह में इसी स्कूल से जागी। यहां पर उन्होंने 13 अप्रैल, 1919 को जलियांवाला बाग की हिंसक ट्रैजेडी का अनुभव किया। जब वे 12 वर्ष के थे तथा लाहौर में डीएवी स्कूल में पढ़ने आ रहे थे पिछले स्कूल के एक अध्यापक ने बच्चों से पूछा कि वे बड़े होकर क्या बनोगे? सभी बच्चों ने अपनी–अपनी इच्छा बता दी। जब भगत सिंह की बारी आई तो उसने कहा ''मुझे पता नहीं, मैं बड़ा होकर क्या करूंगा? पर जो भी मैं करूंगा वह जनकल्याण का कार्य होगा तथा देश के लिए अच्छा होगा।''

इतिहास के पन्ने उलटिये–विश्व में आज तक जितनी भी क्रांतियां आई हैं, उनके पीछे बुद्धिजीवियों की भागीदारी थी। भगत सिंह देश में एक युवा क्रांति को लाने के लिए सक्रिय थे, अतएव वे लाहौर में काफी समय सघन अध्ययन में व्यतीत करते थे। वे ज्यादातर समय द्वारका दास लाईब्रेरी में पढ़ने में बिताते थे। नेशनल कालेज में उनको प्रोफेसर छबील दास अंग्रेजी पढ़ाते थे, बाद में वे इस कालेज के प्रिंसीपल बने। उनका कहना था कि भगत सिंह पढ़ने में आनंदमयी हो जाते थे। उन्होंने साहित्य को काफी रूचि से पढ़ा तथा भगत सिंह की सर्वप्रिय पुस्तक ''Cry For Justice'' थी।

भगत सिंह का मानना था कि हिंसा को हिंसा से समझाना चाहिए। परिवर्तन के लिए समर्पित विचार धारा एवं एक व्यावहारिक संगठन का होना अति आवश्यक है।'' वे उस समय के भारत के लेनिन बन चुके थे। उनके भाषण, उनके पत्रिकाओं में लेख तथा ईश्तिहारों में जनता के लिए संदेश एक बात की पुष्टि करते थे कि वे अंग्रेजों को यह चेता देना चाहते थे कि भारत अब और अधिक पराधीनता सहन नहीं कर सकता। भारत आजादी जनशक्ति से ही प्राप्त करेगा। अतएव अंग्रेजी सरकार इस हकीकत को अब अनसूनी नहीं कर सकती।

उन्होंने सभी क्रांतिकारी संगठनों की एकजुट मंथन बैठक भारत की आजादी की भावी रूपरेखा निर्धारित करने हेतु 8–9 सिंतबर, 1928 को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला ग्राऊंड में आयोजित की। उनका यहां कहना था कि इंग्लैंड से राजनैतिक आजादी भारत के लिये पर्याप्त नहीं होगी, हमें आर्थिक आजादी भी लानी होगी। वे क्रांतिकारी थे, पर साथ में मानवतावादी भी थे। वे गूंगी–बहरी ब्रिटिश सरकार को सावधान करना चाहते थे कि भारत को तुरंत आजादी लेनी है। इस प्रयोजन हेतु उन्होंने एक रूपरेखा तैयार की कि भारत की केंद्रीय एसेंबली में बंम फैंके जायें। हिंसा हेतु नहीं वरन् ब्रिटिश साम्राज्य को जगाने के लिये। युवा क्रांतिकारी साथियों में इस योजना पर सहमति बनी, पर इस योजना को अंजाम कौन देगा, इस पर काफी मतभेद थे। भगत सिंह चाहते थे कि वह इस योजना का क्रियान्वयन करें, पर अन्य साथी इस पर सहमत न थे। भगत सिंह ने अपने सहयोगियों को समझाया कि केंद्रीय एसेंबली में बम फैकना ही पर्याप्त नहीं है, इसके उद्देश्य को इंग्लैंड तथा भारतवासियों तक तर्क संगत तरीके से पहुंचाना भी है, अतएव यह दायित्व मुझे ही निभाना है। भगत सिंह ने अपने साथी बी.के. दत्त के साथ 8 अप्रैल, 1929 को इंकलाब जिंदाबाद के उद्घोष के साथ केंद्रीय एसेंबली में बम धमाका किया तथा वे वहीं पर मौजूद रहे। उन्हें वहीं पर गिरतार करके लाहौर लाया गया।

भगत सिंह ने लाहौर की बोरस्टल जेल में 404 पेज की 'The Jail Note Book' के रूप में अपनी डायरी लिखी। उस समय वहां के जेल वार्डन छत्तर सिंह थे जो भगत सिंह को फाउंटेन पैन तथा नोट बुक व पुस्तकें उपलब्ध कराते थे। भगत सिंह तथा उनके साथियों के विरूद्ध देशद्रोह के अपराध का मुकदमा एक ट्राइब्यूनल में लाहौर में चला। 7 अक्तूबर 1930 को ट्राइब्यूनल ने अपना फैसला सुनाया। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी। कमलनाथ तिवारी, विजय सिन्हा, जयदेव कपूर, शिव वर्मा को आजीवन काला पानी और अजय घोष, सुरेंद्र पांडे को रिहाई, 68 पृष्ठों के फैसले में लिखी गई।

कुलदीप नैयर ने अपनी पुस्तक ''Without Fear-Life and Trial of Bhagat Singh'' में उल्लेख किया है कि ब्रिटिश सरकार भगत सिंह द्वारा एसेंबली में बम फैकने के पश्चात भयभीत हो गई। ब्रिटिश सरकार को यह स्पष्ट हो गया कि वह गांधी के अहिंसा आंदोलन को हमेशा निपटने में सक्षम है परंतु वह भगत सिंह के क्रांतिकारी आंदोलन का सामना नहीं कर पायेगी, अतएव भगत सिंह तथा उनके साथियों को फांसी देना अति आवश्यक है। ट्राईब्यूनल को ऐसा करने का निर्देश पहले ही मिल चुका था।

अपने मित्रों के साथ भगत सिंह ने ब्रिटिश सरकार को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने लिखा –

''हमारे विरूद्ध सबसे बड़ा अभियोग लगाया है कि हमने सम्राट जॉर्ज पंजम के विरूद्ध युद्ध किया है। न्यायालय के निर्णय से दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं– पहली यह कि अंग्रेजी जाति और भारतीय जनता के मध्य एक युद्ध चल रहा है। दूसरा यह कि हमने निश्चित रूप से उस युद्ध में भाग लिया है। अतः हम राजकीय युद्धबंदी हैं। यद्यपि इसकी व्याख्या में बहुत सीमा तक अतिश्योक्ति से काम लिया गया, तथापि हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि

ऐसा करके हमें सम्मानित किया गया है। हमारे विचारानुसार प्रत्यक्ष रूप से ऐसी कोई लड़ाई नहीं छिड़ी है और हम नहीं जानते कि युद्ध छिड़ने से न्यायालय का क्या आशय है? हम कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ है और यह युद्ध तब तक चलता रहेगा, जब तक कि शक्तिशाली व्यक्ति भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साथ नोंक पर अपना एकाधिकार जमाए रखेंगे, चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेजी पूंजीपति हो, अंग्रेजी शासक हो या सर्वथा भारतीय पूंजीपतियों द्वारा ही निर्धनों का खून चूसा जा रहा हो। हम आपसे यह प्रार्थना करना चाहते हैं कि आपकी सरकार के ही एक न्यायालय द्वारा हमारे प्रति युद्धबंदियों जैसा व्यवहार करने को कहा है। हमें, इसलिए फांसी की बजाय गोलियों से उड़ा दिया जाये।'' सरकार इस पत्र को पाकर तथा जनता के आक्रोश को देखकर काफी घबरा गई।

जिस दिन भगत सिंह को फांसी दी जानी थी, निर्धारित समयानुसार वार्डन तथा उनके सहयोगी भगत सिंह के सैल के पास पहुंचे। छत्तर सिंह वार्डन सैल की चाबियों के साथ वहां खड़ा था तथा उसके हाथ कांप रहे थे। भगत सिंह उस समय एक पुस्तक पढ़ रहे थे। उनकी नजर वार्डन पर पड़ी तथा मुस्करा कर कहा आप मुझे कुछ मिनट और देंगे, मैं एक पुस्तक का का अध्याय पढ़ रहा हूं तथा उसके कुछ पेज बचे हैं, उन्हें पढ़ लूं। छत्तर सिंह ने बिना कुछ बोले अपने सहयोगियों की तरफ देखा तथा उन्होंने अपनी गर्दनें हिला दीं। वे सभी शांत अवस्था में खड़े रहे तथा कुछ मिनट भगत सिंह सैल के दरवाजे पर आ गये और वार्डन को अंतिम यात्रा के लिए चलने को कहा। 23 मार्च, 1931 को शाम के 7.15 बजे इंकलाब जिंदाबाद की गूंज के साथ भगत सिंह तथा उनके साथियों ने फांसी का फंदा चूमा। इंकलाब जिंदाबाद की गूंज ने जेल के परिसर के साथ की जनता को अवगत करा दिया कि क्रांतिकारी अमर हो गये हैं।

इतिहास की दृष्टि से बीसवीं सदी में जाट कौम की दो महान विभूतियों ने भारत के इतिहास की नई इबारत लिखी। वे विभूतियां थीं– शहीदे–आजम भगत सिंह तथा रहबरे आजम छोटूराम। और इन दोनों विभूतियों के सिर पर दानवीर छज्जूराम का हाथ था। चौ. छोटूराम के वे धर्मपिता थे जबकि भगत सिंह के वे संरक्षक थे। ऐसी विभूतियों को जाट कौम ने प्रातःकाल दिनचर्या शुरू करने से पूर्व अंतःकरण से नमन करना चाहिये।

अक्षर

–नफे सिंह कादयान

सूर्य देवता ने जैसे ही गांव में रोशनी का पिटारा खोला सरकारी राशन की दुकान पर लोगों की भीड़ लगने लगी। देखते ही देखते मेज पर बी.पी.एल. राशन कार्डों का ढेर लग गया। वहां कुर्सी पर बैठा डीपू वाला उन पर तारीख डाल कर कार्ड धारी को आवाज लगाता व उससे रजिस्टर पर साईन करवा अपने सहयोगी से पैंतिस किलो गेहूं तुलवा कर उसे देता। लोग मेज को चारों ओर से इस प्रकार घेरे खड़े थे जैसे राशन बांटने वाले उन्हें राशन दिए बिना ही भाग जायेगा।

वहां स्त्रियों की संख्या अधिक थी, सभी को जल्दी थी। ''ऐ भाई मेरा एक घंटे से नंबर नहीं आया। मेरे साथ आई औरतें गेहूं तुलवा कर जा चुकी हैं। कमली ने पंजों के बल खड़ी होकर हजूम के पीछे से आवाज लगाई। ''मेरे दस हाथ पांव तो हैं नहीं, राशन कार्ड नंबरवार रखे हुए हैं। तेरा नंबर आयेगा तो आवाज लगा दूंगा। रजिस्टर पर अंगूठा लगा लड़के से गेहूं तुलवा लेना।'' डीपू वाला तल्ख स्वर में कमली से बोला।

''यह अंगूठा क्यों लगाएगी भाई? कमली अपने हस्ताक्षर अच्छी प्रकार कर सकती है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे सर्व शिक्षा अभियान के तहत यह इतना पढ़ना लिखना सीख गई है कि तेरे रजिस्टर पर लिखी लांडी हिंदी भी पढ़ सकती है।'' कमली के साथ आई उसकी पड़ोसन ऊंचे स्वर में बोली तो वहां एकत्र सभी लोग खिलखिला कर हंस पड़े। ''हां–हां, क्यों नहीं, पिछले कुछ वर्षों में सरकार द्वारा चलाए जा रहे जिन सुधारों से आपके गांव में काफी बदलावा आया है। मेरे रजिस्टर पर पहले जहां अधिकतर स्त्रियां अंगूठा लगाती थीं। अब दस्तख्त करती हैं। जब तो प्रोढ़ शिक्षा से आपके गांव की अस्सी वर्षीय अंगुरी देवी भी साईन करने लगी है... डीपू वाला बोला।

''अब तो तेरे तराजू बट्टे भी औरतें चैक कर लेती हैं, वहां खड़ा एक व्यक्ति चुटकी लेते बोला तो सभी दोबारा हंस पड़े। पहले इसी डीपू वाले द्वारा कई प्रकार की बेईमानी की जाती थी। यह लकड़ी की डांडी वाले तराजू में पत्थरों के बनाए बट्टों से तुलाई करता था। इससे यह हेरा फेरी कर पैंतिस की बजाए बी.पी.एल. धारकों को तीस किलो गेहूं ही देता था। मिट्टी का तेल देते समय पांच लीटर का बर्तन अंदर की तरफ पीट कर उसमें बारिक छेद कर देता। जिससे तोलते समय काफी तेल वापिस उसके ड्रम में गिर जाता था। शिक्षा मंत्रालय द्वारा चलाए गए सर्व शिक्षा अभियान व सार्वजनिक मंत्रालय द्वारा चलाए गए 'जागो ग्राहक जागो, अभियान से गांव के लोगों में जागरूकता आई और उन्होंने खाद्य एवं आपूर्ति विभाग में इसकी शिकायत की जिससे यह मीटर वाले तराजू से नाप तोल करके ठीक राशन देने लगा।

कमली का नंबर आया तो उसने जल्दी से रजिस्टर पर साईन किए व अपने बी.पी.एल. कार्ड की पैंतिस किलो गेहूं तुलवा कर तेज कदमों से घर की तरफ भागी। घर के सामने नीम के पेड़ की जड़ों पर बने चबूतरे पर अन्य लफंगों के साथ उसका नक्कारा शराबी पति ताश खेल रहा था। उसे देखते ही कमली का पारा चढ़ गया। घर के अंदर गई तो भैंस चारे की खुरली में गोबर कर देती है कभी पांव रख कर खड़ी हो जाती है, तेरी अक्ल घास चरने गई है क्या?''

भैंस ने सींग हिला कर पांव पीछे हटाते हुए कमली की तरफ ऐसे देखा जैसे कह रही हो 'मर्द से डरे, मुझ पर वार करे। दो चार डंडे जाकर अपने मर्द के पाछे पर जमा दे वह एकदम सीदा हो जाएगा।' तभी कमली की पड़ोसन दरांती लेकर आ गई। कमली ने भी आले में रखी अपनी दरांती उठाई साथ खेतों की तरफ चल दी। सुबह के समय वे हर रोज अपने पशुओं के लिए किसानों के खेतों की मेढ़ों पर उगा घास (चारा) काट कर लाती थी।

गांव के बाहर खेतों में जाने वाली पगडंडी पर आते ही कमली पड़ोसन पर मन का गुब्बार निकालने लगी– ''क्या कहुं साथण... मेरे तो भाग फूटे हुए हैं इस छोटे से गांव में जब मैंने लाल जोड़े में कदम रखे थे तो न जाने क्या–क्या सपने देखे थे। दिल में बड़ी उमंगें थीं पर नशेड़ी खसम ने मेरे सपनों पर पानी फेर दिया। दिन भर ताश खेलता है, रात को टल्ली होकर आता है, अगर मैं कहती हूं तो मुआ पीटने लगता है।

ये तो सरकार ने मुझे सहारा दे दिया वरना तो बच्चों को साथ लेकर आत्महत्या करने की नोबत आ जाती।'' ''सच कहती हो बहन, इस महंगाई के जमाने में सरकार हमें सस्ते दामों पर गेहूं, चावल, चीनी दे रही है, हमारे बच्चों को पढ़ाई–लिखाई के लिए किताब कापियां व वर्दी के लिए पैसे दे रही है। गरीबी उन्मुलन के लिए चलाई जा रही महात्मा गांधी बस्ती योजना से हमें सौ–सौ गज के प्लाट मिले हैं। इंदिरा गांधी पेयजल योजना के तहत सरकार ने टुंटियां लगाकर दो सौ लीटर पानी की टंकियां दी हैं। अब तो मनरेगा के तहत हमें रोजगार भी मिलने लगा है। मेरी लड़की दूसरे गांव में पढ़ने जाती है। पहले वह पैदल चल कर टाईम से स्कूल नहीं पहुंच पाती थी, सरकार की तरफ से उसे साईकिल मिल गया, अब वह झट से स्कूल पहुंच जाती है। कमली की पड़ोसन बोली। ''मुझे तो पहले शौच के लिए बाहर झूण्ड, झाड़ियों के पीछे बैठते बहुत शर्म आती थी, हर समय ये डर लगा रहता था कि न जाने कब कोई मर्द निकल आए। अब तो सरकार ने हमारे मकानों व शौचालय बनाकर दे दिए। अब शौच के लिए बाहर जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता पर बहन इन शराबियों का क्या करें?

कमली ने जैसे ही खेतों से आकर घर में कदम रखा उसे देख भैंस जोर–जोर से रंभाने लगी। 'ठहर जा! मैं तो बाद में पानी पीऊंगी पहले तुझे ही गांव के पक्के तालाब में तैरा कर लाती हूं। उसने घास की गठरी कुट्टी काटने वाली मशीन के आगे डाली और भैंस खोलकर उस तालाब की तरफ चल दी जिसे हाल ही में सरकार ने ग्राम पंचायत को ग्रांट दे पक्का करवाया था। पहले इसमें कीचड़ की भरमार थी जिसमें कई बुढ़े पशु फंस जाते थे। पक्का बनने से इसमें इतना साफ पानी रहने लगा कि गर्मी से निजात पाने के लिए यहां अब पशुओं के साथ गांव के बच्चे, बुढ़े भी गोते लगाते हैं।

कमली ने भैंस को पानी पिलाकर बाहर बाड़े में बांध दिया। यह सौ गज का प्लाट उसे हाल ही में सरकार द्वारा दिया गया था। बच्चे स्कूल से आते ही होंगे। उनके लिए रोटी भी बनानी है। ये सोचते हुए वह तेज कदमों से चल कर घर आ गई। अभी उसने पहली रोटी तवे पर डाली थी तभी बबली, रिंकु स्कूल से आ गए। बबली ने साबुन से हाथ धोए मगर रिंकु हाथ धोए बगैर ही रोटी उठाने लगा तो वह उसे डांटते हुए बोली– ''स्कूल से मास्टर जी हमें समझावत हैं कि साबुन से तुम हाथ चमकाओ! फिर रोटी को हाथ लगाओ। ''सॉरी दीदी मैं भूल गया। रिंकु उठकर नल पर साबुन से हाथ धो रोटी खाने लगा। कमली की भैंस को न जाने क्या हो गया। वह चारा नहीं खा रही थी। उसने चारे में आटा मिलाकर देखा पर कोई फायदा नहीं हुआ। कई दिन तक जब भैंस ने घास को मुंह नहीं लगाया तो उसे बहुत चिंता हुई। बीमारी से भैंस इतनी कमजोर हो गई कि उसने दूध देना बंद कर दिया। पड़ोसी आकर उसे तरह–तरह के नुक्ते बता रहे थे। एक आकर बोला 'इसे सूँ नमक की पेढ़ी बनाकर खिलाओ, दूसरे ने कहा इसे काला नमक डाल कर देशी खांड चटाओ यह पक्का ठीक होगी। एक पड़ोसन आकर उसे समझाने लगी कि तुम्हारी भैंस को नजर लग गई है मौलवी से पढ़वा कर इसके गले से चाम की जुत्ती बांध दो। सभी टोटके आजमाने के बाद भी जब भैंस ठीक नहीं हुई तो वह उसे पशुओं के डॉक्टर के पास ले गई। ''इसे तो बड़ा तेज बुखार है, डॉक्टर भैंस को चैक करते हुए बोला। बहुत खराब हालत हो चुकी है, पहले इसे दवाई क्यों नहीं दिलवाई?'' ''जी घरेलू टोटके आजमा कर देख रहे थे। कमली बोली। झाड़–फूंक से अगर इंसान व पशु ठीक हो जाते तो डॉक्टरों की आवश्यकता ही नहीं होती। सरकार ने हर गांव में लोगों के इलाज के लिए प्राथमिक हस्पताल बना दिए हैं। पशुओं के लिए पशु डाक्टरों की नियुक्तियां कर रखी हैं। यह सब तुम्हारी भलाई के लिए है और आप लोग हैं कि अब भी टोने टोटकों में विश्वास रखते हो। लो ये दवाई मेडिकल स्टोर से लाकर अपनी भैंस को पिला देना, वैसे तुम्हारी भैंस आखरी स्टेज पर चल रही है। डॉक्टर पर्ची बनाकर उसे देता हुआ बोला। डॉक्टर साहब ने पूरे साढ़े चार सौ रूपये की दवा लिख दी है, घर में फूटी कोड़ी भी नहीं। कमली बबली को पर्ची दिखाते हुए रूआंसे स्वर में बोली। लो मां इनसे दवाई ले आओ। बबली किताब से निकाल कर पांच सौ का एक नोट अपनी मां को देते हुए बोली। ये पैसे मुझे स्कूल से छात्रवृति के मिले हैं। एक तुम हो जिसे छोटी उम्र में ही घर की चिंता है, एक वो तेरा शराबी बाप है जो गंदी नालियों में पड़ा रहता है। कमली प्यार से बबली के सर पर हाथ रखते हुए बोली।

कमली ने दवाई लाकर भैंस को पिलाई मगर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। शाम की परछाईयों के सिमटते ही भैंस की आत्मा उसके शरीर से अलग हो गई। कमली रात भर सो न सकी, दूध बेचकर उनकी रोजी रोटी चल रही थी, अब घर का खर्च कैसे चलेगा? वह खूब रोई मगर होनी को कोई नहीं टाल सकता था।

सुबह सभी पड़ोसी दुख व्यक्त करने आए ओर साथ में कमली को उलाहना भी देते गए कि उसने उनका बताया टोटका ठीक तरह से नहीं आजमाया वरना भैंस नहीं मरती। उसके पति की बुद्धि दारू ने हर ली थी। वह उनमें से था जो घर में लगी आग को बुझाने के बजाए उसमें हाथ सेकते हैं। वह पशुओं के चाम खरीदने वाले मोची के पास पहुंचा और मरी भैंस को दौ सौ रूपये में बेचकर दारू पी गया। कमली ने पति को खूब खरी खोटी सुनाई पर वह जुबानी वार तक सीमित थी। वैसे भी ईश्वर ने औरत के शरीर को कुछ इस तरह से बनाया है कि बेशक वह शारीरिक रूप से मर्द से दुगने डील डोल की हो मगर फिर भी लड़ाई के मामले में अधिकतर मर्द का पलड़ा भारी रहता है। कमली का पति चिकने घड़े के समान था। कुछ देर अनसुनी करता रहा फिर हाथ में डंडा उठाकर मारने दौड़ा पर तभी उनके मोहल्ले की रहने वाली प्रधान ताई आ गई। उसने उसे डांट लगाई की वह डंडा एक तरफ फैंक झूमता हुआ बाहर चला गया। कमली ताई को देखते ही रोने लगी। रो मत! ताई उसके सर पर हाथ फैर के बोली तेरी भैंस के मरने की खबर मुझे सुबह मिली तो दौड़ी चली आई। ऐसी ही समस्याओं के हल के लिए सरकार हमें स्वयं सहायता समूह खोलने के लिए प्रेरित करती है। हमारे समूह को तो तीन वर्ष से ऊपर हो गए हैं। उसमें सरकार की तरफ से भी पैसा जमा करवाया गया है। मैं समूह की प्रधान हूं। हम तुझे पचास हजार रूपये तक लोन दे सकते हैं। दूध बेचकर चुका देना। मैं आज ही स्वयं सहायता समूह के सदस्यों की बैठक बुलाती हूं।

ताई की बात सुन कमली ने राहत की सांस ली। ए.डी.सी. कार्यालय की तरफ से गांव में अनुसूचित जाति की स्त्रियों को स्वावलंबी बनाने के लिए गयाहर सदस्यों पर आधारित स्वयं सहायता समूह बनाए गए थे। इनमें सभी सदस्य पचास रूपये हर महीने देते थे। सरकार की तरफ से भी उसमें दस हजार रूपये प्रोत्साहन राशि डाल दी जाती थी। इस प्रकार इन समूहों के पैसे में वृद्धि होती रहती थी। जरूरत पड़ने पर हर सदस्य इस पैसे में से कोई भी काम करने के लिए लोन ले सकता था। दोपहर बांद स्वयं सहायता समूह की प्रधान ताई ने अपने सभी सदस्यों की बैठक बुलाई। वे सभी बच्चों की छुट्टी के बाद आंगनवाड़ी की ईमारत में एकत्र हो गई। यहां सरकार द्वारा छोटे बच्चों को पौष्टिक भोजन देने की व्यवस्था की गई है। उन्हें दलिया, खिचड़ी व अन्य कई प्रकार के खाद्य पदार्थ दिए जाते हैं और दोपहर तक सभी नन्हें–मुन्नों को चित्रों की सहायता से लिखना–पढ़ना सिखाया जाता है और उन्हें उठने बैठने का सलिका भी सिखाया जाता है।

समूह की सभी स्त्रियों के आंगनवाड़ी के बरामदे में बैठते ही प्रधान ताई खड़े होकर बोली– हमारी सभी बहनें अपने समूह को तीन

वर्ष से सुचारू रूप से चला रही हैं। अब तक समूह के बैंक खाते में ब्याज सहित दो लाख दो हजार तीन सो पच्चीस रूपये जमा हो चुके हैं, इसके लिए सभी सदस्याएं बधाई की पात्र हैं। आज की यह सभा कमली की समस्या हल करने के लिए बुलाई गई है। बीमारी से इसकी भैंस मर चुकी है और आप सबको मालूम ही है कि इसका पति हर समय नशे में टल्ली रहता है। घर का खर्च इसे ही चलाना पड़ता है। मैं सभी बहनों से अनुरोध ा करती हूं कि इसे साझे खाते से लोन दिया जाए।

हां... हां... लोन देने में हमें कोई समस्या नहीं है मगर इन शराबियों का भी कुछ हल निकालो। कमला खड़े होकर बोली– गांव में अनेक नशेबाज हैं जो कोई काम धंधा तो करते नहीं, उल्टे अपनी स्त्रियों से मारपीट करते हैं। हमारी बहने खेत खलिहान के सभी काम करती हैं, उन्हें घर के भी सभी काम करने पड़ते हैं। खेत से चारा काटकर लाना, चारा मशीन में उसकी कुट्टी काटकर पशुओं को खिलाना। दूध निकालना, रोटी बनाना, कपड़े धोना, बर्तन मांझना, झाडु बुहारना सब काम स्त्रियां करती हैं। इतना करने के बाद भी इन्हें घर के मर्द प्रताड़ित करते हैं। आखिर कब तक ये अत्याचार सहती रहेंगी। अब अधिकतर स्त्रियां शिक्षित हो चुकी हैं। अब हमें सभी स्त्रियों को घरेलू हिंसा के प्रति सजग करना ही होगा। जब से गांव की परचून की दुकानों पर अवैध रूप से दारू बिकने लगी है मर्द हर समय नशे में टुन्न रहने लगे हैं। ताश खेलने और दारू पीने के अलावा इन्हें कोई काम नहीं है। अब तो स्कूल, कालेजों में पढ़ने वाले लड़के भी बियर पीने लगे हैं। कुछ दिनों में ये पूरे नशेड़ी बनकर अपने घर व पूरे देश पर बोझ बन जाएंगे। इस समस्या का कोई हल सोचो? रोशनी ने उसके सुर में सुन मिलाते हुए कहा।

अगर हम सभी स्त्रियां मिलकर इन दुकानदारों का विरोध करें तो इस समस्या से मुक्ति मिल सकती है। गांव में शराब मिलनी बंद हो गई तो अनेक मर्दों की लत छुट सकती है। सबसे पहले तो हम गांव के सरपंच के पास इनकी शिकायत करेंगे। अगर वह कार्यवाही नहीं करता तो फिर हम पुलिस में इसकी शिकायत करेंगे। पंचायत बैठक में अपना सुझाव रखते हुए बोली। क्यों नहीं, मैं आज ही गांव के सभी स्वयं सहायता समूह प्रधानों से मिलकर इस समस्या के बारे विचार विमर्श करती हूं। साथ में महिला मण्डल की स्त्रियों व आशा वर्करों से भी मिलती हूं। मुझे पूरी आशा है कि गांव की सभी स्त्रियां नशा विरोधी मुहिम में हमारा साथ देंगी। प्रधान ताई बोली और उसने सभी की सहमती से कमली के लिए पचास हजार रूपये के लोन प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करवा लिए। अगले रोज सरपंच के दलान में गांव की स्त्रियों का पूरा जत्था पहुंच गया। उनके साथ शराबियों से तंग आए हुए अनेक पुरूष भी थे। सरपंच के कानों में जब हजूम का शोर पहुंचा तो वह घर से बाहर आकर हंसते हुए पुरूषों से बोला– ये चोटी वालियां की फौज बनाकर कहां चढ़ाई करने का इरादा है भाई।

ये फौज तुझे चोटियों से बांधकर घसीटेगी, प्रधान ताई को गुस्सा आ गया। वह आगे बोली– गांव के बच्चे तक जानते हैं कि तेरी सरपंची में यहां खुलेआम दारू बिक रही है। ऐसा कैसे हो सकता है कि एक–एक वोट का समीकरण बनाने वाले को छल्लियां उघाड़ते कौए न दिखाई दें। तुझे हमेशा शराबियों की वोट खिसकने का डर लगा रहता है।

अरे नहीं ताई, मुझे वाकई इस बारे कोई जानकारी नहीं है। अगर गांव में कोई गलत काम कर रहा है तो उसे रोकना मेरा कर्तव्य बनता है। चलो अभी आपके साथ चल कर उन्हें शराब बेचने के लिए मना करते हैं। सरपंच प्रधान ताई की खुशामद करते हुए बोला। वह जानता था कि अगर गांव की स्त्रियों को नाराज कर दिया तो अगले चुनाव में हार निश्चित होगी। गांव में तीन दुकानदार अवैध रूप से शराब बेच रहे थे। जब सरपंच स्त्रियों को साथ लेकर पहुंचा तो उनके होश उड़ गए। दो दुकानदारों ने सरपंच से माफी मांगते हुए आगे न बेचने की कसम खा ली मगर जब तीसरे दुकानदार के पास पहुंचे तो वह खुद ही नशे में धुत हुआ बैठा था। वह आंखें मिचमिचाते हुए अकड़ कर सरपंच से बोला– घणी सरपंची मत झाड़ तेरे जैसे सरपंच मन्नै घणे देखे सै। मैंने ठेकेदार की परमिशन ले राक्खी सै, अड़ै तां पिवांगे अर छोरयां नै पिलावांगे।

सरकार द्वारा ठेकेदारों को केवल ठेके पर शराब बेचने की परमिशन दी जाती है, वह परचून की दुकानों पर रखकर शराब नहीं बिकवा सकता। यह गैर कानूनी है। सरपंच उसे समझाते हुए बोला। औए... ठेकेदार नेता का खासमखास सै। कानून नै तो वो जेब मैं गाल्यां फिरासै। मरे बटे, तन्ने ज्याणसी मेरी पुंजड़ पाड़नी पाड़ ले। लाल परी तै अड़े युंई बिकेगी। चर्चा तिरे नाम का जिब हुया करै मैखाने मैं, अर जख्मी कलेजा टूट कै भाई घलजा सै पैमाने मैं। वह स्त्रियों की तरफ ईशारा कर बेसुरे सुर में गाने लगा। यह ऐसे नहीं मानेगा, बहनों... इसके थोबड़े पर दो–दो चप्पल रसीद करो। प्रधान ताई आगे बढ़कर उसका गिरेबान पकड़ते हुए बोली।

ताई... कानून को अपने हाथ में मत लो, यह नशे में धुत है। मैं वादा करता हूं कल ही इसकी शराब की बिक्री बंद करवा दुंगा। सरपंच ताई से उसे छुड़वाता हुआ बोला। अगले रोज शाम के समय सरपंच की शिकायत पर गांव में विजिलैंस की टीम पहुंच गई। वह दुकानदार अपने ग्राहकों को दुकान के आगे गली में बैठाकर दारू पिला रहा था। विजिलैंस के लोगों ने दुकानदार को तो गिरतार किया ही साथ में सार्वजनिक स्थान पर शराब पीने के जुर्म में चार शराबियों का भी चलान काट दिया। स्त्रियों के कहने पर सरपंच ने पूरे गांव के लोगों की पंचायत घर में बुला लिया। वह वहां बरामदे में खड़े नीम के पेड़ की जड़ों पर बनाए चबुतरे पर चढ़कर गांव वालों से बोला– आज से गांव में जो व्यक्ति शराब बेचता पकड़ा जाएगा, उसे पुलिस के हवाले किया जाएगा और जो पीता हुआ पकड़ा जाएगा उस पर एक हजार रूपया जुर्माना लगेगा। हम घर बाहर के सभी कार्य करती हैं फिर भी मर्द हमको मामूली बातों पर बहाने बनाकर पीटते हैं। सरपंच जी इनका भी कुछ सुधार करो। कमली पंचायत में सरपंच से बोली।

मेरा खसम तो मुझे हर रोज पीटता है, कभी कहता है सब्जी में नमक अधिक डाल दिया, कभी कुर्ते पर प्रैस सही नहीं की। हद तो तब होती है जब वह पीटते हुए कहता है बोल तेरा शादी से पहले कहां–कहां चक्कर चल रहा था। चम्पा पंचायत में ही बोलते–बोलते रोने लगी।

समाज में कुछ विकृत प्रवृति के लोग होते हैं जो स्त्रियों का अपमान करते हैं, जबकि सभी पुरूष स्त्री की ही कोख से जन्म लेते हैं। अगर आप लोग सहयोग करें तो मेरे पास एक ऐसी तरकीब है जिससे घरेलू हिंसा के साथ भ्रूण हत्या, चोरी चकारी पर भी अंकुश लग सकेगा।

हां... हां... हमारा पूरा सहयोग मिलेगा। सभी स्त्री पुरूष एक साथ बोल पड़े। तो ध्यान से सुनो, हमारे गांव की जनसंख्या लगभग साढ़े तीन हजार है जिसे प्रशासन द्वारा विकास कार्यों में सहुलियत के लिए सात वार्डों में बांटा गया है। हम सभी जनों की सहमति से सामाजिक बुराईयों के खात्मे के लिए सातो वार्डों में इक्किस मैंबरों पर आधारित स्वयं सुरक्षा समूह बनाएंगे।

ये समूह कौन बनाएगा व इनसे कैसे सामाजिक बुराईयां खत्म होगी? एक रिटायर्ड फौजी ने सरपंच से प्रश्न किया। फौजी साहेब आप किस मर्ज की दवा हो, सरपंच हंसते हुए बोला। हर एक वार्ड में इन समूहों को बनाने की जिम्मेदारी वार्ड के भूतपूर्व फौजियों, अध्यापकों व अन्य

बुद्धिजीवी वर्ग की होगी। वे अपने पास रजिस्टर रखेंगे, जिसमें समूह मैंबरों के नाम व उनके कार्यों का ब्योरा रखा जाएगा। सभी को पैन कापी रजिस्टर मैं पंचायत खाते से दिलवा दूंगा। इन समूहों में युवा वर्ग एवं महिलाओं को पूरा प्रतिनिधित्व दिया जाएगा। सबसे अच्छा कार्य करने वाले स्वयं सुरक्षा समूह को हर वर्ष आजादी के दिन पन्द्रह अगस्त पर सम्मानित भी किया जाएगा। ये तो बहुत ही अच्छा विचार है, मगर समूह मैंबरों को क्या–क्या काम करने होंगे जिससे सामाजिक बुराईयों से छुटकारा मिले। प्रधान ताई अधीर होते हुए बोली। किस घर में क्या घटित होता है ये मोहल्ले पड़ोस को पूरा पता होता है। हर समूह अपने वार्ड का प्रहरी होगा। समूह के सदस्य अपने–अपने मोहल्ले के घरों पर नजर रखेंगे। जो भी व्यक्ति घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, भ्रूण हत्या या नशा प्रवृति जैसी बुराई में लिप्त पाएजाएंगे वह उनके बारे में मीटिंग बुलाकर समूह सदस्यों को सूचित करेगा, फिर तत्काल सभी समूहों की बैठक बुलाई जाएगी। अगर मसला आपसी रजामंदी से नहीं निपटता तो फिर कानून की सहायता ली जाएगी। इन समूहों की मदद से कुछ हद तक आतंकवाद, बिजली पानी की सरकारी चोरी व भ्रष्टाचार को भी रोकने में कामयाबी मिल सकती है। वो कैसे? एक युवा जोश में भरकर सरपंच से बोला। जैसा की तुम सभी जानते हो आतंकवादी वारदात करने से पहले हमारे देश के रहने वाले चंद गद्दारों की मदद लेते हैं। ये उन्हें पनाह देते हैं व उनके हथियारों को छुपाते हैं। वार्ड समूहों को समय–समय पर हर घर की तलाशी लेने का अधिकार होगा। वे घरों में ठहरे अजनबियों का पूर्ण परिचय प्राप्त करेंगे व शक होने पर पुलिस को इतला करेंगे। साथ में जो लोग तारों में कुण्डी डालकर बिजली चोरी करते हैं उनकी भी शिकायत करेंगे। सरकार द्वारा गांव में कराए जा रहे भवन, गली, सड़क या अन्य किसी भी प्रकार के निर्माण कार्य में ठेकेदार अगर घटिया मैटिरियल लगाएंगे तो उनकी शिकायत बड़े अफसरों तक पहुंचाएंगे। हम आज से ही अपने वार्ड में स्वयं सुरक्षा समूह बनाने का काम शुरू करते हैं, एक साथ कई लोग बोल पड़े। कुछ ही दिनों में गांव के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा सभी वाड़ों में स्वयं समूहों का गठन पूरा कर लिया गया। समूह बनने के बाद गांव में सभी असामाजिक तत्वों पर पूरी तरह अंकुश लग गया। लोन के पैसों से कमली ने नई भैंस खरीद ली। अब उसका घर वाला भी शराब से तोबा कर काम में उसका साथ बंटाने लगा था। अब कमली के गांव में हर तरफ खुशहाली का माहौला था।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Boy 28/5'10" B.Tech (Mechinical) from Thapar Patiala and working in US Company, Chicago Bridge Gud Iron (CBI) in Dubai with Salary 50 Lakh P.A., Father Dy. CMO (Retd.) and Mother Lecturer (Physics) going to be retired in May 2016. Presently settled at Gurgaon. Rural/Urban property. Avoid Gotras: Maham, Balhara, Nain (Bernal & Sheoran Direct) Cont.: 9416273450
- SM4 Jat Girl (DOB September 1990) 25.7/5'5" B.Com. M.Com, BEd. Teaching in a private school. Avoid Gotras: Tanwar, Sheoran, Jakhar, Cont.: 08284050424
- SM4 Jat Girl (DOB 27.02.88) 28.2/5'3" B.Com, M.B.A. LLB., Employed as Lecturer in M.L.N. College, Yamuna Nagar. Avoid Gotras: Dodwal, Kadian, Sandhu, Cont.: 09416493264
- SM4 Jat Girl 25/5'3" M.Tech. in Computer Science Employed in MNC Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Tomar, Deshwal, Cont.: 09467749393
- SM4 Jat Girl (DOB 06.02.92) 24.2/5'2" M.A.(Economics) BEd. Employed in S.D. College, Sector 32, Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal, Cont.: 07837908269, 08968111254
- SM4 Jat Girl (DOB 15.03.91) 25.1/5'4" M.A.(Economics) French Employed in State Bank of India in PGI Chandigarh. Avoid Gotras: Poria, Dahiya, Hooda, Deshwal, Duhan, Chachal, Malik, Cont.: 09465223365
- SM4 Jat Girl (DOB 04.08.90) 25.8/5'4.5" M.C.A from P. U. Chandigarh. Employed as Software Developer (Alchemist IT Company Chandigarh). Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar, Cont.: 09463330394
- SM4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 24.2/5'4" M.Sc Physics from P. U. Chandigarh. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Sinhmar, Cont.: 09463330394, 09646712812
- SM4 Jat Girl (DOB 1991), 5'1" B.Com, MBA Employed as Assistant Reliance Manager in PNB Insurance. Parents Government Service, Good Land Avoid Gotras: Malik, Lohan, Cont.: 0941685031 1
- SM4 Jat Girl (DOB September 1990), 25.6/5'3" M.D. in Physiothraphy. Employed in MNC Gurgaon Avoid Gotras: Sangwan, Antil, Nagil, Cont.: 08901097278
- SM4 Jat Girl (DOB June 1992), 23.10/5'6" M.Sc. Employed as Dietician in Gurgaon, Avoid Gotras: Joon, Loha, Cont.: 09779932001
- SM4 Jat Girl (DOB 1990), 5'5" M.Sc. Bioinformatic Employed as Research Associate Brother, Bhabi in England, Father Ex-IAF, now with Haryana Government.
- Avoid Gotras: Katira, Katkar, Bura, Cont.: 09988643695
- SM4 Jat Girl (DOB February1989),27.2/5'3" , BA, MCA Employed in Government Service at Chandigarh. Avoid Gotras: Sheoran, Punia, Sangwan, Cont.: 09988359360
- SM4 (Divorcee Issue less) Jat Girl (DOB August1987),28.8/5'6", M.Tech. in Computer Engineering. Employed as Assistant Professor in Engineering College, Landra (Pb.) Avoid Gotras: Sangroha, Lohan, Panghal, Cont.: 09464141784
- SM4 Jat Girl (DOB 02.10.80) 35.5/5'3" MS.c, M.Phil., B.Ed. Employed as Permanent Junior Lecturer in Haryana Government. Avoid Gotras: Nandal, Dalal, Sehrawat, Cont.: 08570032764
- SM4 Jat Girl (DOB 13.12.86) 28.10/5'5" BCA., MCA Employed as Lecturer in a reputed College at Sampla, Distt. Rohtak (Haryana) Avoid Gotras: Pawaria, Nandal, Ahlawat, Cont.: 09811658557, 09289822077
- SM for Jat Girl 25/5'3" B. Com, MBA (Finance) One year Diploma in Computer Software (HARTRON) Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Khatri, Cont.: 09216360300
- SM for Jat Girl (DOB 08.11.90) 25.2/5'3" Employed as Staff Nurse in Govt. Hospital Sector 6, Panchkula, Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat, Cont.: 09463881657
- SM4 Jat Girl 25/5'2" B.Tech (CSE) Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Boy 27/5'8" B.A. LLB Doing Practice at District Court Panchkula. Avoid Gotra: Balyan, Nehra, Cont.: 09416914340
- SM4 Jat Boy 28/5'10" Betch. (Mechanical) from Thappar Patiala Working in US Company, Chicago Bridge XI Iron (CBI) in Dubai with salary 50 Lakh PA, Father Deputy CMO (Rtd.), Mother Lecturer (Physics) going to be retired in May, 2016, Presently settled at Gurgaon, Rural/Urban property. Avoid Gotra: Mohan, Balhara, Nain, (Berwal & Sheoran avoid Direct) Cont.: 09416273450
- SM4 Jat Boy 28/5'11" B.Tech. M.Tech from NIT Jaipur Working as Planner in MNC Gurgaon. Avoid Gotra: Sangwan, Gulia, Bajiya, Cont.: 09467923726
- SM4 Jat Girl 25.3.1990/5'6" B. Sc. Honour Math & Computering, PU Chandigarh, M.Sc Honour Mathmatics PU Chandigarh and B.Ed with CTET & HTET. Avoid Gotra: Rathi, Maan, Dhanda, Cont.: 9815253211

प्रेम का मूल्य

–डा. धर्मचंद विद्या लकार

नीता आज भले ही जेल की सींखचों में बंद थी। कानून की दृष्टि में वह अपराधी थी। समाज की दृष्टि में वह हत्यारी थी। ध र्माचार्यों की दृष्टि में वह भले ही दुराचारिणी थी। लेकिन वह स्वयं को एक सच्ची प्रेम पुजारिन ही तो मानती थी। क्योंकि उसने रामकुमार गुप्ता के सिवाय और किसी पुरुष से शारीरिक संबंध स्थापित ही कहां किया था। यह सब तो बहुत दूर की बात है, उसने तो और किसी से प्रेम ही नहीं किया, चाहे यह समाज आज उसको वारांगना ही क्यों न समझे।

...हां, यह अपराध वह आज अवश्य अपना अंगीकार करती है कि उसने एक विवाहित पुरुष के साथ स्नेह किया है। यदि यह एक अक्षम्य अपराध है तो यह उसने किया है, इसके लिए उसे कानून और समाज चाहे जो सजा दे। लेकिन उसके अपने मन में इस कार्य के लिए कोई खेद नहीं है।

वह इस कारागार के एकांत उपांत में चिंतन–मग्न थी–अपने देश का कानून और समाज न तो दूसरा विवाह करने की अनुमति देता है और न ही उसे प्रेम संबंधों को ही वह सहन और स्वीकार करता है। वह यह नहीं देख सकती थी कि उसका प्रेम–पात्र एक ऐसी स्त्री के साथ रहे जोकि उसको प्रेम ही न करती हो। लेकिन उसका प्रेमी था कि कुलीनता की कसक के कारण उस में चाहे संबंध को भी ढो ही रहा था। परंतु उसका अपना प्रेमावेग तो इतना उद्दाम है कि वह यह सब सहन नहीं कर सकती। शोभा को अपने प्रेम–पंथ का नुकीला कांटा मानकर उसको हटाने के सिवाय और कोई वैध उपाय भी तो नहीं था। तभी तो उसने यह अत्यंतिक आपराधिक मार्ग अपने प्रेम–पंथ को प्रशस्त करने हेतु अपनाया था।

रामकुमार के घर से ऑफिस में फोन आया था–गुप्ता जी! मैं आपका पड़ोसी शर्मा बोल रहा हूं।

हां, कहिये क्या बात है।

अंदर से भाभी जी की आवाज नहीं आ रही है और किवाड़ बंद हैं।

ऐसा क्यों? गुप्ता जी ने पूछ लिया था।

हमारे बार–बार खटखटाने पर भी वे न तो किवाड़ खोल रही हैं और न ही कुछ बोल रही हैं।

आप ठहरिये मैं अभी घर पर आ रहा हूं...

कहीं कुछ ऐसा–वैसा तो नहीं हो गया है। वह स्वयं आशंकित था।

उसने सेफ से चाबियों का गुच्छा निकाला था, और वह अपनी गाड़ी की ओर बढ़ा था। जैसे ही घर पर आकर देखा था तो कई पड़ोसी स्त्री–पुरुष और बच्चे उसके वहां पर इकट्ठे होकर इंतजार कर रहे थे।

उसने उन्हें कुरेदा था– क्या कोई आवाज आयी? शर्मा जी।

नहीं तो गुप्ता जी।

ठीक है, मैं अभी पुलिस को सूचित करता हूं।

उसने अपना मोबाईल डायल किया था, सौ नंबर पर– हैल्लो! मैं रामकुमार गुप्ता मुंबई की मुलुण्ड कालोनी से बोल रहा हूं। मेरे घर का दरवाजा अंदर से बंद है, मेरी पत्नी की भी आवाज नहीं आ रही है सर। मुझे कुछ अनिष्ट की आशंका है, आप सहायता कीजिए मेरा तो सिर चकरा रहा है।

दिवान ने उनका पता पूछकर आश्वस्त किया था–जस्ट वेट! पुलिस जल्दी ही पहुंच रही है।

पुलिस इंस्पेक्टर ने आकर दरवाजा खटखटाया था। जब गेट नहीं खुला तो उसने सूराख में से अंदर झांका था तो उसे एक स्त्री पलंग से नीचे पड़ी हुई दिखाई दी थी।

तभी उसने अपने सहयोगियों को आदेश दिया था–किवाड़ को उतारो।

गेट तोड़कर अंदर जैसे ही झांका था तो शोभा की देह क्षत–विक्षत अवस्था में नीचे पड़ी थी। उसके बाल नोंचे हुए थे। कपड़े फटे हुए थे। सामान इधर–उधर फैला हुआ था। वह अचेत थी। पुलिस इंस्पेक्टर ने उसका हाथ पकड़कर शोभा की नब्ज को टटोलना चाहा था–वह एकदम निस्तब्ध और निस्पंद थी। उसके शरीर पर भी कई घाव थे।

पत्नी की यह स्थिति देखकर रामकुमार चीख उठा था–हाय! मैं तो लुट गया–मेरा तो घर उजड़ गया...अब मेरे बच्चों को कौन पालेगा? इसी के साथ उसने अपना सिर पकड़ लिया था।

पुलिस इंस्पेक्टर ने उसको आश्वस्त किया था–मिस्टर गुप्ता। आप धैर्य रखिये, हम अभी मामले की छान–बीन करते हैं। वैसे ऊपर से देखने में तो मामला लूटपाट का ही प्रतीत होता है क्योंकि आपकी सेफ जो टूटी हुई है–सामान भी इधर–उधर बिखरा हुआ है।

इसी के साथ शोभा के शव को पोस्टमार्टम के लिए रवाना कर दिया गया था। तब तक उसके दोनों बच्चे भी विद्यालय से आ गये थे। जैसे ही उन्हें यह ज्ञात हुआ कि उनकी मम्मी का किसी ने मर्डर कर दिया है तो वे भी सिसक उठे थे।

रामकुमार गुप्ता अपने दोनों बच्चों से लिपटकर बिलख उठा था–अब मेरे बच्चों का क्या होगा? इनका खाना कौन बनायेगा–इन्हें कौन नहलायेगा–धुलायेगा या फिर स्कूल तैयार करके भेजेगा...

किसी ने परामर्श दिया था–गुप्ता जी! मां तो मां ही होती है, उसका स्थान तो कोई दूसरी स्त्री कैसे ले सकती है, परंतु फिर भी नौकरानी तो रखी ही जा सकती है।

एक पड़ोसिन उसके घर से निकलती–निकलती बुदबुदा रही थी–है तो सही वो परकटी उसी के साथ घर बसा लेगा।

उसकी बात पर तब किसी ने विशेष ध्यान नहीं दिया था। लेकिन यही मिसेज शर्मा तो उनकी सबसे निकट की पड़ोसिन थी और उसकी पत्नी शोभा की सहेली भी तो थी।

पुलिस अधीक्षक की दृष्टि में यह अभियोग एक प्रकार की रहस्यकथा ही तो थी। वह इस मामले की जांच करे तो कहां से शुरू

नीता आज भले ही जेल की सींखचों में बंद थी। कानून की दृष्टि में

वह अपराधी थी। समाज की दृष्टि में वह हत्यारी थी। धर्माचार्यों की दृष्टि में वह भले ही दुराचारिणी थी। लेकिन वह स्वयं को एक सच्ची प्रेम पुजारिन ही तो मानती थी। क्योंकि उसने रामकुमार गुप्ता के सिवाय और किसी पुरुष से शारीरिक संबंध स्थापित ही कहां किया था। यह सब तो बहुत दूर की बात है, उसने तो और किसी से प्रेम ही नहीं किया, चाहे यह समाज आज उसको वारांगना ही क्यों न समझे।

...हां, यह अपराध वह आज अवश्य अपना अंगीकार करती है कि उसने एक विवाहित पुरुष के साथ स्नेह किया है। यदि यह एक अक्षम्य अपराध है तो यह उसने किया है, इसके लिए उसे कानून और समाज चाहे जो सजा दे। लेकिन उसके अपने मन में इस कार्य के लिए कोई खेद नहीं है।

वह इस कारागार के एकांत उपांत में चिंतन–मग्न थी–अपने देश का कानून और समाज न तो दूसरा विवाह करने की अनुमति देता है और न ही उसे प्रेम संबंधों को ही वह सहन और स्वीकार करता है। वह यह नहीं देख सकती थी कि उसका प्रेम–पात्र एक ऐसी स्त्री के साथ रहे जोकि उसको प्रेम ही न करती हो। लेकिन उसका प्रेमी था कि कुलीनता की कसक के कारण उस में चाहे संबंध को भी ढो ही रहा था। परंतु उसका अपना प्रेमावेग तो इतना उद्दाम है कि वह यह सब सहन नहीं कर सकती। शोभा को अपने प्रेम–पंथ का नुकीला कांटा मानकर उसको हटाने के सिवाय और कोई वैध उपाय भी तो नहीं था। तभी तो उसने यह अत्यंतिक आपराधिक मार्ग अपने प्रेम–पंथ को प्रशस्त करने हेतु अपनाया था।

रामकुमार के घर से ऑफिस में फोन आया था–गुप्ता जी! मैं आपका पड़ोसी शर्मा बोल रहा हूं।

हां, कहिये क्या बात है।

अंदर से भाभी जी की आवाज नहीं आ रही है और किवाड़ बंद हैं।

ऐसा क्यों? गुप्ता जी ने पूछ लिया था।

हमारे बार–बार खटखटाने पर भी वे न तो किवाड़ खोल रही हैं और न ही कुछ बोल रही हैं।

आप ठहरिये मैं अभी घर पर आ रहा हूं...

कहीं कुछ ऐसा–वैसा तो नहीं हो गया है। वह स्वयं आशंकित था।

उसने सेफ से चाबियों का गुच्छा निकाला था, और वह अपनी गाड़ी की ओर बढ़ा था। जैसे ही घर पर आकर देखा था तो कई पड़ोसी स्त्री–पुरुष और बच्चे उसके वहां पर इकट्ठे होकर इंतजार कर रहे थे।

उसने उन्हें कुरेदा था– क्या कोई आवाज आयी? शर्मा जी।

नहीं तो गुप्ता जी।

ठीक है, मैं अभी पुलिस को सूचित करता हूं।

उसने अपना मोबाईल डायल किया था, सौ नंबर पर–हैल्लो! मैं रामकुमार गुप्ता मुंबई की मुलुण्ड कालोनी से बोल रहा हूं। मेरे घर का दरवाजा अंदर से बंद है, मेरी पत्नी की भी आवाज नहीं आ रही है सर। मुझे कुछ अनिष्ट की आशंका है, आप सहायता कीजिए मेरा तो सिर चकरा रहा है।

दिवान ने उनका पता पूछकर आश्वस्त किया था–जस्ट वेट! पुलिस जल्दी ही पहुंच रही है।

पुलिस इंस्पेक्टर ने आकर दरवाजा खटखटाया था। जब गेट नहीं खुला तो उसने सूराख में से अंदर झांका था तो उसे एक स्त्री पलंग से नीचे पड़ी हुई दिखाई दी थी।

तभी उसने अपने सहयोगियों को आदेश दिया था–किवाड़ को उतारो।

गेट तोड़कर अंदर जैसे ही झांका था तो शोभा की देह क्षत–विक्षत अवस्था में नीचे पड़ी थी। उसके बाल नोंचे हुए थे। कपड़े फटे हुए थे। सामान इधर–उधर फैला हुआ था। वह अचेत थी। पुलिस इंस्पेक्टर ने उसका हाथ पकड़कर शोभा की नब्ज को टटोलना चाहा था–वह एकदम निस्तब्ध और निस्पंद थी। उसके शरीर पर भी कई घाव थे।

पत्नी की यह स्थिति देखकर रामकुमार चीख उठा था–हाय! मैं तो लुट गया–मेरा तो घर उजड़ गया...अब मेरे बच्चों को कौन पालेगा? इसी के साथ उसने अपना सिर पकड़ लिया था।

पुलिस इंस्पेक्टर ने उसको आश्वस्त किया था–मिस्टर गुप्ता। आप धैर्य रखिये, हम अभी मामले की छान–बीन करते हैं। वैसे ऊपर से देखने में तो मामला लूटपाट का ही प्रतीत होता है क्योंकि आपकी सेफ जो टूटी हुई है–सामान भी इधर–उधर बिखरा हुआ है।

इसी के साथ शोभा के शव को पोस्टमार्टम के लिए रवाना कर दिया गया था। तब तक उसके दोनों बच्चे भी विद्यालय से आ गये थे। जैसे ही उन्हें यह ज्ञात हुआ कि उनकी मम्मी का किसी ने मर्डर कर दिया है तो वे भी सिसक उठे थे।

रामकुमार गुप्ता अपने दोनों बच्चों से लिपटकर बिलख उठा था–अब मेरे बच्चों का क्या होगा? इनका खाना कौन बनायेगा–इन्हें कौन नहलायेगा–धुलायेगा या फिर स्कूल तैयार करके भेजेगा...

किसी ने परामर्श दिया था–गुप्ता जी! मां तो मां ही होती है, उसका स्थान तो कोई दूसरी स्त्री कैसे ले सकती है, परंतु फिर भी नौकरानी तो रखी ही जा सकती है।

एक पड़ोसिन उसके घर से निकलती–निकलती बुदबुदा रही थी–है तो सही वो परकटी उसी के साथ घर बसा लेगा।

उसकी बात पर तब किसी ने विशेष ध्यान नहीं दिया था। लेकिन यही मिसेज शर्मा तो उनकी सबसे निकट की पड़ोसिन थी और उसकी पत्नी शोभा की सहेली भी तो थी।

पुलिस अधीक्षक की दृष्टि में यह अभियोग एक प्रकार की रहस्यकथा ही तो थी। वह इस मामले की जांच करे तो कहां से शुरू करें, कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था। तदपि उसने एक दिन दोपहर को मि. शर्मा के घर पर दस्तक दी थी। मि. शर्मा भी लंच के लिए वहीं मौजूद थे।

पुलिस इंस्पेक्टर ने पूछा था–मिस्टर शर्मा। गुप्ता दंपत्ति के आपसी संबंध कैसे थे।

मिस्टर शर्मा ने उनको बैठने की ओर संकेत करते हुए फुसफुसाया था–सर! हमारे लिए तो अच्छा ही था–

नहीं उनका आपस में व्यवहार–बर्ताव कैसा था?

उनमें कभी कोई लड़ाई–झगड़ा मार–पीट या कहा–सुनी हुई हो? वह अपनी–अपनी बड़ी–बड़ी आंखें उनकी ओर टिकाये हुए थे।

मिसेज शर्मा ने अंदर से ट्रे में पानी के गिलास पकड़ाते हुए बताया था–वैसी तो कोई विशेष बात नहीं थी इंस्पेक्टर साहब! लेकिन पति–पत्नी में कई बार कहा–सुनी जरूर हो जाया करती थी।

मिस्टर शर्मा पत्नी को घूर–घूरकर देख रहे थे। उनकी दृष्टि में यह उनका अपना पारिवारिक मामला ही था, जिसमें उनके उलझने का औचित्य ही कहां था।

पुलिस इंस्पेक्टर ने अपनी मोटी–मोटी आंखों से मिसेज शर्मा को बिसूरते हुए पूछ ही लिया था–बहन जी! गुप्ता दम्पत्ति में कहा–सुनी किस बात को लेकर होती थी?

उसने खड़े–खड़े ही बताया था–और तो कोई खास वजह नहीं थी–बस किसी लड़की को लेकर कभी–कभार नोंक–झोंक हो जाया करती थी।

मिस्टर शर्मा पत्नी को अंदर किचिन में जाने का संकेत हाथ और आंखों से कर रहे थे। उनके लिए यह सब 'आ बैल मुझे मारने' वाली ही बात थी।

तभी तो शर्मा जी ने उसे हड़काया था–तुझे दूसरे के घर का क्या पता, घर–परिवार में सौ बातें होती हैं–फिर पति–पत्नी का क्या झगड़ा होता है... हम पड़ोसी उनकी हर बात को ही सुनने देखने को तो नहीं बैठे हैं इंस्पेक्टर साहब! आप क्यों बेवजह इस औरत के मुंह लग रहे हैं...।

परंतु पुलिस को तो जैसे किसी अंधेरी सुरंग का मुहाना मिलने का आभास हो रहा था... तभी तो इंस्पेक्टर ने नरमी के साथ मिसेज शर्मा को कुरेदा था– बहन जी! क्या उस औरत का नाम आपने सुना है।

हां जी, वह तो नीता–नीता बोलती थी। उसी को लेकर परेशान रहती थी।

मिसेज शर्मा भी और कोई होता तो इस झमेले में भला क्यों पड़ती लेकिन मामला उसकी अपनी सहेली और पड़ोसिन का था, जिसको वह सर्वाधिक स्नेह करती थी। उससे ही अपना सुख–दुख कह सुन सकती थी। मिसेज गुप्ता भी तो उससे कुछ छिपाकर नहीं रखती थी। तभी तो उसे रामकुमार गुप्ता और नीता शर्मा के संबंधों के विषय में जानकारी थी।

उसकी सहेली शोभा अपने पति को उससे मिलने से बरजती थी लेकिन वह भी तो ऐसा रसिक भौरा था कि एक कली से बंधकर रह भी कब पाता था। वह प्रेम को विवाह के बंधन से ऊपर मानता था। जबकि शोभा विवाह को ही प्रेम का पर्याय मानती थी।

जलपान के पश्चात पुलिस इंस्पेक्टर ने शर्मा दम्पत्ति से ध न्यवाद के साथ विदाई ली थी।

उसने उसी दिन सांयकाल फोन करके रामकुमार गुप्ता को पुलिस स्टेशन पर बुलाया था।

गुप्ता ने यही समझा था कि संभवतः उसकी पत्नी की हत्या को कोई सुराग मिल गया होगा, उसी की जानकारी के लिए पुलिस ने उसको बुलाया होगा।

पुलिस इंस्पेक्टर ने उसको अपने आफिस में बिठाकर पूछा था–मिस्टर गुप्ता–यह नीता शर्मा कौन है?

मुझे मालूम नहीं है सर।

झूठ बोलते हो, तुम्हारे उसके साथ संबंध हैं। उसके स्वर में बलाघात और रौब था।

जी! प्रेम संबंध तो हैं, लेकिन भला वह ऐसा क्यों करने लगी है।

और कौन कर सकता है? क्या तुम्हारी किसी से दुश्मनी है–कोई विजनिस में प्रतिस्पर्द्धा है?

जी, नहीं। यह गुप्ता का स्वर था।

तब आप हमें नीता का पता दीजिये।

हां सर! वह तो घाटकोपर के एक लॉज में रहती है।

उसका नंबर क्या है?

छत्तीस... सर!

ठीक है –इसी के साथ इंस्पेक्टर ने डायरी में कुछ नोट किया था और उसे जाने की अनुमति दी थी।

मुंबई पुलिस ने अगले ही दिन घाटकोपर के लॉज में रिसोर्ट नं. 36 पर दबिश दी थी। बाहर से द्वार खटखटाया था तो एक सुंदर युवती बाहर आयी थी। उसने आशंकित स्वर में पूछा था–सर! यहां पर पुलिस का क्या काम है?

इंस्पेक्टर चौधरी ने उसे टोका था–तुम्हारा रामकुमार गुप्ता से क्या संबंध है?

सर, वह मेरा पति है।

इसका कोई प्रमाण।

जी हां, यह मेरी शादी की एलबम है। इसी के साथ उसने अपने विवाह के फोटो दिखाये थे। रामकुमार गुप्ता के गले में माला थी; तो सिर पर शादी की पगड़ी थी। नीता भी लाल जोड़ा पहने थी और दोनों के ही ग्रंथि–बंधन का दृश्य था।

तभी उसके साथ उनकी दृष्टि एक व्यक्ति पर पड़ी थी–अरे! यह तो वही अब्दुल करीम है, जिसकी तलाश पुलिस को घाटकोपर बम मामले में है–

नीता जी! क्या आप हमें इस व्यक्ति का पता दे सकती हैं?

हां, सर! पहले तो वह वहां पर शांताक्रुज में रहता था–यह उसका लैट नंबर है–अबका मुझे मालूम नहीं।

पुलिस ने रात में ही दबिश देकर अब्दुल करीम और उसके एक अन्य साथी को उसके घर में ही दबोच लिया था।

इंस्पेक्टर चौधरी ने उनको पुलिस स्टेशन में लाकर एकांत में आगाह किया था–हमें नीता ने सब कुछ बता दिया है।

यह सुनते ही अब्दुल करीब के पावों के नीचे से जमीन खिसकने लगी थी। अब तक वह स्वयं को इस अभियोग से असंबद्ध बता रहा था।

नीता का नाम सुनते ही उसने स्पष्टीकरण दिया था–सर! यह सब उसी का किया–धरा है, हमने तो उसी के संकेत पर इसमें हिस्सा लिया है।

पुलिस इंस्पेक्टर ने नीता शर्मा को भी वहीं पर बुलवा लिया था।

वह तो यही सोचकर निश्चिंत थी कि उसने तो जैसे वैसा कुछ किया ही नहीं है। फिर वह तो रामकुमार गुप्ता की परिणीता पत्नी है। दूसरी हुई तो क्या, आखिर वह प्रेम तो उसी के साथ करता है। सुधा तो उसकी जैसे एक घरेलू नौकरानी ही थी। वह यदि उसके घर में भी रहती है तो रहे लेकिन उसके हृदय में तो उसी के लिए सच्चा स्नेह और सम्मान है। उसने जो कुछ भी किया है, वह अपने प्रियतम को संपूर्ण भाव से पाने के लिए ही तो किया है। उसके लिए रामकुमार से क्षण भर का भी बिलगाव असहाय था। उसी का अंत करने के लिए ही तो उसने अपने प्रेम–पंथ में बिखरे कांटों को ही तो चुना है।

इंस्पेक्टर चौधरी ने उसको अब्दुल करीम और उसके साथी के ही समक्ष हड़काया था–हमें इनसे सब कुछ मालूम हो चुका है। यह सारी रचना तुम्हारी ही रची हुई है मैडम! अब या तो आप अपने अपराध को मान करके सत्य को स्वीकार करने का साहस दिखायें; नहीं तो फिर पुलिस और न्यायालय तो अपना कार्य करेंगे ही। ये दोनों अब हमारे वायदा खिलाफ गवाह हैं। अब तुम सोच लीजिये कि तुम्हें क्या.....

सुधा की मृत्यु के सारे रहस्य का उद्‌घाटन जानकर उसकी श्वासें उखड़ने लगी थीं। कंठावरोध हो गया था। अब वह कहे तो क्या कहे। उसके एक ओर कुंआ था, तो दूसरी ओर खाई थी। एक ओर प्रेम की कठिन परीक्षा थी, तो दूसरी ओर सत्य को स्वीकार करने का कठोर साहस था। एक ओर कानून के फंदे से बचाव की अभिलाषा थी; तो दूसरी ओर प्रेम के लिए सर्वस्व समर्पण की अमिट इच्छा थी। लेकिन अब सत्य को स्वीकारने के अतिरिक्त कोई और विकल्प भी तो नहीं था।

तभी उसने पुलिस अधीक्षक के सम्मुख स्वीकृति में बुदबुदाया था– हां, सर मैंने अपने प्रियतम को संपूर्णतया पाने के लिए ही यह अपराध किया है। हत्या वाले दिन मैं भी इनके साथ गुप्ता जी के घर गयी थी किराये के लिए मकान ढूंढने का बहाना बनाकर उसका अंत कर दिया था। लेकिन यहां पर मैं यह भी स्पष्ट कर देती हूं कि इस कार्य में मेरे प्रेमी और पति रामकुमार गुप्ता की कोई सहमति नहीं थी। इसी के साथ उसने स्वयं को कानून के सामने समर्पित कर दिया था। ऐसा करके उसने अपने पुनीत प्रेम का मूल्य चुका ही दिया था। उसको इस बात पर गर्व था कोई ग्लानि नहीं थी।

Women Are Born Managers And Leaders

-Sri Sri Ravi Shankar

Women have both gentleness and strength. Indian scriptures place tremendous amount of power in women. The primordial energy known as Shakti Which is the life force behind entire creation is feminine. That is why our scriptures honour women as the highest aspect of divinity-the Aadhya Shakti.

Women bring together the finest aspects of society; the ability to create and the transformational ability to make a difference. Women bring us to the planet and teach us how to live. A mother is our first guru, our first teacher. Women teach us our first behaviour, our first step in life. And then women also have a great role to play in society. She can be a strong peacemaker; at home, in the community, in society and in the world. Women can glue differences and bring people of diverse nature together-she does it in her home all the time! In this fast pace of life, we need to balance our inner peace, beauty and ethical values with the external challenges we face, and women have it in them to do it. These qualities are inherent in a woman.

A woman has the capacity to be an excellent peacemaker because it is quite natural for her to relate from the level of the heart. The biggest strength that a woman has is her emotions, feelings, motivation and inspiration. Men can inspire to fight but women inspire to unite. There are more wars in the world today because there is a lack of femining leadership to unite people, overcome differences and bring home to us the purpose we are all born for! In today's war-torn world, we need women to come to the forefront and take more responsibility, without getting stressed. When women are determined, they can do wonders.

Today, we need to ensure that women in our country are literate. When women are well educated and well informed they can take more responsibility, bring about that positive change and can make any project successful.

A woman by nature is multi-talented and multi-faceted. Usually people think women are emotional but the fact is, women are also great intellectual geniuses and excel in planning and execution. You see any department headed by a woman; chances are that department is much ahead of others.

Women are the backbone of any society. The role of women in the development of a society is of utmost importance. It is the only criterion that determines whether a society is strong and harmonious or not. Also, a corruption-free society can only emerge where women are given due regard, respect and importance. In building character and integrity, women can do a better job.

Given the wealth that is inherent in them, it is very important for women all around the world to sit together and see what they can do to make this world more stress and violence free. You are that spirit. You are the one who can instill love, compassion, spirituality in people around you and society.

Do not wait to be given power. Just assume it. Unfortunately most of the feminine movements today are demanding rights. You have equal rights. Just own it! You simply have to assert your rights! You don't have to go and ask somebody, it is all there for you! You are a born leader. You have the potential with you to bring prosperity, happiness and joy to this world! Just make this happen!

आगरा : बड़ौदा का लगानबंदी का ऐतिहासिक जन-किसान आंदोलन

–डॉ. दुर्गपाल सिंह सोलंकी, कुंवर अरुण प्रताप सिंह 'चमन'

दिसंबर सन् 1931 में जिला आगरा के किसानों ने ब्रिटिश शासन के अन्याय, दमन एवं अत्याचारों के विरोध में लगानबंदी आंदोलन किया था। इस आंदोलन में किसानों के साथ संपन्न समाजसेवी, जमींदार, मजदूर व सामान्य जनता ने भी सक्रिय रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अंग्रेज प्रशासन ने सत्याग्रहियों पर कई तरह से भयंकर अत्याचार किये। आंदोलनकर्ताओं पर घोड़े दौड़ाये गये, पीट–पीटकर तालाबों–पोखरों में फेंका गया लेकिन स्वतंत्रता के दीवाने ''राजा महेंद्र प्रताप की जय'' ''दीनबंधु सर छोटूराम की जय'' ''महात्मा गांधी की जय'' जैसे गगनभेदी नारों–जयकारों के साथ आगे बढ़ते गये। इस लेख में उसी ऐतिहासिक किसान जन आंदोलन की एक संक्षिप्त तस्वीर प्रस्तुत करने का प्रयास है।

आधुनिक भारत के प्रमुख निर्माताओं में एक लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल गुजरात में बारडौली के किसानों को लेकर लगानबंदी का ऐतिहासिक आंदोलन कर चुके थे। ''नमक कानून तोड़ो'' और ''सत्याग्रह आंदोलन की सफलता'' से आगरा जिले का जनमानस बहुत उत्साहित था। परिणामस्वरूप जिला आगरा का किसान भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए आगे बढ़ा। 'सैनिक' समाचार पत्र के संस्थापक पं. श्री कृष्णा दत्त पालीवाल, ठा. उल्फतसिंह चौहान 'निर्भय', प्रतिष्ठित समाजसेवी जमींदार ठा. देवेंद्र मुन्नासिंह सोलंकी, कुंवर पुस्कार सिंह, श्री ज्योति प्रसाद उपाध्याय, श्री रविवर्मा आर्य, श्री रमेश वर्मा, मुंशी फैलीराम आदि ने जिले के किसानों का नेतृत्व किया। उन्होंने इलाहबाद में संपन्न प्रांतीय सभा की बैठक में लगानबंदी आंदोलन की योजना प्रस्तुत की। इस योजना के तहत जमींदारों को मालगुजारी न देने और किसानों को केवल सरकार का साथ देने वाले जमींदारों का लगान न देने का कार्य करना था। उक्त नेता गण महात्मा गांधी का कंधा से कंधा मिलाकर सहयोग कर रहे थे।

इस कार्य को सफल करने के लिये प्रत्येक तहसील में दो–दो गांवों का चयन किया गया था। तहसील किरावली में बड़ौदा और मिलावटी, खेरागढ़ में नगला जोधना–कागारौल तथा चॉडी, फिरोजाबाद में लौकीगढ़ी व भंगीपुरा, आगरा सदर में बिचपुरी और जारुआकटरा, एत्मादपुर में नगला धोकल एवं गढ़ी सहजा, फतेहाबाद में नीवरी तथा गुढ़ा, बाह में जरार व पारना आदि गांवों में लगानबंदी का ऐलान कियाथा। कई गांवों के किसानों के घरेलू बर्तन, चक्की, कपड़े, चारपाई आदि तक तहसीलों में रखवा दिये गये, गांवों के गांव तक प्रशासन ने खाली करवा दिये। बैल, भैंस, बकरी, भेड़, घोड़ों आदि तक को पुलिस हॉक ले गयी। फिर भी किसान भाईयों ने लगानबंदी आंदोलन में उत्साह से हिस्सा लिया और अपनी प्रतिज्ञा से नहीं हटे और न विचलित हुए। पुलिस ने आंदोलनकारी गांवों में दमन चक्र से भीषण अत्याचार किए। लेकिन गांव बड़ौदा में किसान की बहादुरी व साहस और सहकारी दमन की सर्वाधिक बर्बरता देखने को मिली।

31 दिसंबर सन् 1931 को प्रातः बेला में निकटवर्ती गांवों के हजारों किसानों के झुण्ड के झुण्ड बगल में गुड़ और भुने हुए चनों की थैलियां लेकर बड़ौदा ग्राम की ओर बढ़ गए। पैदल टोलियों के अलावा ''भारत माता'' और ''गांधी की जय'' बोलती भीड़ बेझिझक व निडर होकर बड़ौदा पहुंची। यद्यपि पुलिस ने बड़ौदा जाने वाले वाहनों इक्के, तांगों आदि को रोक दिया था, फिर भी कागारौल, अकोला, मलपुरा, किरावली, अदनेरा, पथौली, मिढ़ाकुर, फतेहपुर सीकरी, बहा–बधा–सैनिग दूरा, रोझौली, बेरी, बिसैरा, जैंगारा, राजस्थान के भरतपुर, आगरा सदर के गांवों तथा शहर से हजारों पुरुष एवं महिलाएं पैदल, बैलगाड़ियों, खड़खड़िडयाओं और साईकिलों पर चढ़कर बड़ौदा का लगानबंदी यज्ञ देखने के लिए पहुंचे। लगानबंदी का कार्यक्रम एक यज्ञ से शुभारंभ किये जाने की योजना थी। इस हेतु एक ऊंचा चबूतरा चुना गया था। इस आंदोलन को विफल करने के लिए हजारों की संख्या में अंग्रेज और भारतीय पुलिस मौजुद थी। पुलिस ने यज्ञ स्थल से सत्याग्रहियों को हटा दिया, यज्ञ का सामान फैंक दिया और बड़ौदा में धारा 144 लगा दी गयी। इस स्थिति में भी सत्याग्रही जत्थे धारा 144 को तोड़ कर यज्ञ स्थल की और बढ़ते गये। पुलिस सत्याग्रहियों पर घोड़े दौड़ाती रही, लेकिन जत्थों पर जत्थे आते रहे। पूरे दिन पुलिस लाठियां बरसाती रही, पिटाई करके पोखर–तालाब में फैंकती रही, यही सिलसिला लगातार चलता रहा। एक और पुलिस की कूर्ता और दूसरी ओर जनता का अदम्य साहस दोनों का कोई जवाब नहीं था। बड़ौदा का आकाश ''भारत माता की जय'' ''गांधी जी की जय'' ''कांग्रेस जिंदाबाद'' सत्याग्रह के दीवानों, आगे बढ़ो हम तुम्हारे साथ है'' के गगनभेदी नारों से गूंज रहा था और तिरंगे झण्डे हवा में लहरा रहे थे। गांव सैनिगा से तिरंगा झण्डा की पोशाक पहने युवक तेजसिंह वर्मा इस यज्ञ मुहीम में आकर्षण का केंद्र बना हुआ था। जो अपने पिता श्री मेवसिंह व ताऊजी श्री नानिगारामसिंह के साथ आया हुआ था, आज वे वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी हैं और उन्होंने पैंशन आदि सुविध ाएं लेने से इनकार कर दिया। चारों ओर अपार जन समूह का सैलाव मंडरा रहा था, मानों उज्जैन, नासिक, हरिद्वार या इलाहाबाद का कुंभ मेला लगा हो। इस स्वाधीनता की गंगा के किनारे विशाल मेला लगा था जिसमें स्नान करने का पुण्य लाभ कोई व्यक्ति खोना नहीं चाहता था।

पुलिस ने चारों ओर से उमड़ती हुई भीड़ को रोकने के लिये बड़ौदा आने वाले मार्गों की नाकेबंदी की ओर भीड़ को खदेड़ना प्रारंभ किया। इन पंक्तियों के लेखक को अपने शोध सर्वेक्षण के दौरान एक सच्ची कहानी बतायी गयी जिसमें ग्राम कराहरा के निकट स्थिति सिकरबार गांव के जाट किसान श्री लहसासिंह तथा उनके ऊंट का इस यज्ञ से घनिष्ठ संबंध रहा था। जब श्री लहसना ने पुलिस को सत्याग्रही महिला एवं पुरुष किसानों के ऊपर घोड़ों को दौड़ता देखा तो वह बौखला गया। वह रास्ते के सहारे खड़े पेड़ों की आड़ में छिप गया और जैसे ही किसी अंग्रेज पुलिस सिपाही–अधिकारी को लोगों को खदेड़ता देखता है, तो तुरंत बाज की तरह उस पर झपटता और उसके मुंह पर ऐसी चोट मारता कि वह जमीन नापता होता और श्री लहसना जी का ऊंट तब तक नौ दो ग्यारह हो जाता, वे इस पवित्र कार्य को ऊंट के थकने तक अंजाम देते रहे। क्षेत्र की जनता को श्री लहसना सिंह व उनके ऊंट पर भारी गर्व है। वहां इलाके में इसकी चर्चा होती रहती है।

ग्राम अकोला निवासी 83 वर्षीय महाश्य छोटेलाल जी दस–दस सत्यागहियों की सात टोलियां लेकर बड़ौदा गांव की ओर बढ़ रहे थे। उन्होंने देखा कि उनके पूर्व में आए सत्याग्रहियों को पुलिस ने मार–मार कर घायलवस्था में कर दिया है और उनके घावों से खून रिस रहा है, फिर भी निर्भीकतापूर्वक उनकी टोलियां गांव की ओर बढ़ती रहीं, जब तक देख कर महाश्य जी ने करब (पशु–चारा) की पूलियां–गठ्ठर सिर पर रखकर गांव की ओर चल दिये, वे आगे बढ़ते रहे और पुलिस उनके ऊपर लगातार लाठी मार रही थी। ऐसी दशा में श्री छोटेलाल ने एक घर की छत पर पुलियां फैंक कर स्वयं चढ़ गये और लुक छिप कर चकमा देकर यज्ञ स्थल पर पहुंच कर जोर–जोर से नारे और जयकारों से आकाश को गुंजायमान कर दिया। पुलिस ने कई बार उनको तथा अकोला के ही श्री राम सिंह व श्री धाराजीत सिंह को पोखर में फैंका। वे सभी नारे लगाते हुए बाहर निकलते और फिर उसी में फैंक दिये जाते, आखिरकार पुलिस को हार माननी पड़ी। हजारों सत्याग्रहियों को घायल और कुछ को गिरतार करके पुलिस पीछे हट गयी। उक्त आंदोलन में मिढ़ाकुर गांव के श्री जय तथा श्री विजय एत्मादपुर के श्री जगन्नाथ सिंह तथा रामा ज्ञानी, नगला जयराम के सर्व श्री भगवती सिंह, किशन सिंह, डोरीलाल, भरतसिंह व चंपाराम ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। श्री भगवत तथा श्री किशन सिंह को पन्द्रह–पन्द्रह वैतों की सजा भी मिली थी। कशहरा के सरदार सिंह मुखिया जी भी अग्रिम पंक्ति के सत्याग्रही थे। उनके पुत्र डा. नत्थन सिंह वरिष्ठ लेखक व साहित्यकार थे।

कुंवर पुस्कर सिंह स्वतंत्रता सेनानी, अखर लेखक, संपादक कवि तथा माता दुर्गा देवी के परम भक्त थे। दैविक शक्ति संपन्न थे। भरतपुर के राजा बच्चुसिंह व राजाभान सिंह के राजस्थान स्वतंत्र पार्टी के महासचिव पद पर रहे।

घनिष्ठ मित्र व सहयोगी एवं लेखक के चाचा श्री थे। उन्होंने अन्य लेखन कार्यों के अलावा ''राजामान सिंह'' व ''महाराजा सूरजमल'' पर दो ऐतिहासिक पुस्तकों का `लेखन किया। श्री महेंद्र सिकरवार उनकी स्मृति में 'पुष्कर सिंह शोध संस्थान' भरतपुर में संचालन कर रहे हैं।

खद्दर की सफेद कुर्ता–धोती पहने पथौली गांव के श्री रवि वर्मा जी जो जीवन भर कांग्रेसी रहे, राष्ट्रीय आंदोलन पर गर्व महसूस करते हैं। आंदोलनकारी सत्याग्रहियों की देशभक्ति तथा नैतिक मूल्यों पर उनको नाज है और आज के नेताओं के प्रति उतना ही विरागा उनको आश्चर्य होता है कि आज का हिंदुस्तानी इतना बदल कैसे गया? उसकी कथनी और करनी में इतना अंतर कैसे आ गया? वह इतना व्यक्तिवादी कैसे हो गया? आधुनिक समय के बढ़ते भ्रष्टाचार के संबंध में लेखक ने एक साक्षात्कार में श्री वर्माजी से पूंछा कि क्या आपको यह अनुभव नहीं होता कि आप लोगों का आजादी का बलिदान अपूर्ण रह गया? तो उनकी आंखों में चमक आ गई। वे मुस्कुरा ये और बोले कि, ''हमारी पीढ़ी ने अपना काम पूरी ईमानदारी से साथ किया और हमने अंग्रेजों को देश से भगा दिया। आप लोग पूरी ईमानदारी के साथ प्रयास कर भ्रष्टाचार को भगा दें''। श्री रविवर्मा जी के जीवन काल में व पश्चात उनके पुत्र श्री विक्रम सिंह पांच बार पथौली के ग्राम प्रधान, एक–एक बार आगरा जिला परिषद के सदस्य तथा आकरा जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होकर अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदत्त कीं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु रवि वर्मा जी के समय उनके निवास पर पधार चुके हैं तथा पत्थर की वह कुर्सी–सीट जिस पर बिठाकर नेहरु जी का सम्मान किया गया था, आज भी सुरक्षित है। श्री राकेश वर्मा अपनी पारिवारिक परंपराओं को आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहते हैं। अखिल भारतीय जाट आरक्षण संघर्ष समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी यशपाल मलिक जी की एक सफल विशाल सभा का आयोजन श्री राकेश कर चुके हैं। समाज को राकेश से काफी आशाएं हैं। प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों में ऐतिहासिक गांव नगला जो धना के सर्वश्री रविवर्मा आर्य, शुद्धि सभा, आर्य समाज के मंत्री ठा. मंगलसिंह जी ''जाटवीर'' मासिक पत्र के संपादक श्री हेतराम सोलंकी, ठेकेदार जय सिंह, बाबू देवराज वर्मा, श्री चित्रांगेद सिंह तथा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष ठा. देवेंद्र सिंह सोलंकी (उप. नाम ठा. मुन्ना सिंह मुखिया जी) थे जिन्होंने आजादी की लड़ाई में तन–मन–धन से सहयोग किया था। श्री देवेंद्र सिंह ''जाट बोर्डिंग हाउस'' की स्थापना की जिसमें अनेक महानुभावों के अलावा रहबरे आजम दीनबंधु सर छोटूराम ने निवास कर वकालत प्रारंभ की थी। जहां नगला जोधना का एक युवक भंवरी दो रूपये में उनका हुक्का भरता था। किसान–मसीहा पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह भी इस बोर्डिंग हाउस में कुछ समय रहे। इससे पहले नगला जो धना में रहकर छोटूराम जी ने आगरा कालेज आगरा से एलएलबी की परीक्षा पास की थीं। हुक्का, मेज, सोफा, चौकी आदि वस्तुएं आदि आज भी सुरक्षित रखी हुई हैं। यहां से चौ. चरण सिंह ने बीएससी पार्ट दो उत्तीर्ण किया था।

कस्वा कागारौल के पं. जगनप्रसाद रावत, मुंशी फैलीराम, लोकेंद्र सिंह, खैमसिंह, जयहिंद जादव, गंगाधर वैद्य, मुंशी चतुर सिंह, मुंशी दखारी लाल, खान उमर, साबू मिया, रामशरण सिंह ग्राम चीत के शैहरे भूप सिंह, पौत्र श्री केशव सिंह शर्मा, ग्राम दूरा कि सर्व श्री धर्म सिंह, कुंवर राजेंद्र सिंह, श्रीमती चंद्रवती देवी, मिलावली के ठा. मूलचंद्र जी, ठा. जयपाल सिंह, चांड़ी के ठा. किशन सिंह चौहान व ठा. गुलाब सिंह परमार, बीसलपुर के खाजू खां श्री तथा श्री मिहीलाल, गढ़ी बलजीत के लक्ष्मण सिंह, बेरीचाहर के सर्व श्री छिद्दूसिंह, खुबीराम लवानिया, श्री तेजपाल सिंह, रतनसिंह उर्फ रतनी, मुरकिया के हकीम चुन्नीलाल, दिगरौता के पं. सालिगराम, जैनई के शोभाराम, चंदनसिंह, बाद के मुंशी बालकृष्ण जी व श्री मुंशी लोटन सिंह, बिसैरा के समाजसेवी जमींदार रामसिंह व दफैदार श्री जय सिंह, मां डईके श्री किशोरीलाल फौजदार, गौंछ के श्री बलवीर सिंह, सरसा के श्री चरणदास व हीरा सिंह जी, सरैंधी के जगजीत सिंह तथा श्री गजाध ार सिंह, बरगमा के श्री जगन्नाथ सिंह, जोतराज के श्री तुलरामसिंह, करहरा के श्री रघुनाथ सिंह, उंदेरा के श्री किशन सिंह, रामनगर के श्री रमेश वर्मा। श्री वर्मा जी उच्च कोटि के लेखक व संपादक थे।

वे उत्तर प्रदेश विधानसभा के 1952 में सदस्य निर्वाचित हुए। खलौआ के श्री नत्थीलाल व श्री महाराज सिंह, सालेहनगर–बरुअर के श्री मुनीर खां तथा श्री मनीराम सिकरवार राजामण्डी–आर्यसमाज, आगरा में कार्यकर्ता रहे। नगला विष्णु के ठा. तोताराम सिंह सिकरवार, मिढ़ाकुर के सर्व श्री चिरंजीलाल पटेल, ठा. गिरजिसिंह, राधेलाल सारस्वत, ग्यासीराम शर्मा व श्री होतीलाल, गहर्रा के पं. ज्योति प्रसाद वैद्य श्री देवीसिंह चाहर, राजनारायण सक्सैना, हुब्बनारायण सक्सैना, कुंडौल के रणजीत सिंह आर्य, मोजपुर के श्री सूरजसिंह यादव व श्री सरवन सिंह, बिचपुरी के पं. मनोहर लाल व पं. नत्थीलाल शर्मा। श्री देवीसिंह चाहर आगरा जिला कांग्रेस कमेटी के वर्षों महामंत्री, चाहरवारी कॉलेज अकोला के प्रबंधक तथा बाद में भारतीय कांतिदल के वरिष्ठ

नेता थे। मॉड़ई के श्री किशोरीलाल भी अकोला कालेज के प्रबंधक रहे। कुकथला के मास्टर अतर सिंह ने आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। कागारौल के श्री जगनप्रसाद रावत को उत्तर प्रदेश सरकार में अनेकों बार मंत्री पद मिला। इन्हें आगरा डिस्टिक्ट बोर्ड के सैक्रेटरी ठा. दलीप सिंह जी ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया तथा परिवारीजनों ने राजनैतिक सहयोग व सुविधाओं प्रदान की। ठा. तोताराम आगरा जिला परिषद के सदस्य रहे। ठा. जय सिंह ठेकेदार श्री महात्मा दूध ाधारी इंटर कॉलेज के अध्यक्ष पद पर वर्षों तक आसीन रहे। श्री देवेंद्र सिंह उर्फ मुन्ना सिंह जी इसी कॉलेज के प्रथम मैनेजिंग ट्रस्टी थे। सैथा के ठाकुर महाराज सिंह गुर्जर, बहा के कुंदरसिंह, बधा के बदनसिंह, औरंगपुर के महाशय चुन्नीलाल, सैनिगा के हेडमास्टर छिद्दा सिंह, महाशय लोकमणि सिंह, ठा. मूलचंद्र जी, श्री नानिगाराम सिंह, श्री मेवसिंह व उनके पुत्र श्री तेजसिंह वर्मा, रीझौली के श्री तोताराम सिंह जी, मनकैड़ा के भंवरसिंह, श्री सियाराम सिंह फौजदार बाह के गोकरन सिंह, कुंवर बैजनाथ सिंह, श्रीमती विद्यावती राठौर, कुंवर प्रबल प्रताप सिंह, आगरा नगर के राजामण्डी निवासी श्री पुरुषोतम सिंह चंदेल (भून प्रेस के प्रोप्राइटर थे) नाई की मण्डी के श्री टीकमसिंह, बिरहरु के श्री तारा सिंह धाकरे, आदि महानुभावों ने आंदोलन में भाग लिया। ठा. महाराज सिंह के पुत्र श्री मण्डलेश्वर सिंह खेरागढ़ से विद्यायक व मंत्री रहे। श्रीमती विद्यावती जी बाह से विद्यायक व मंत्री रहीं। ठा. तोताराम सिंह चाहर आगरा जिला परिषद के वर्षों सदस्य रहे। श्रीमती चंपावती जी विधायक के आप जेठ थे। श्री तोताराम जी के पुत्र श्री कुंवर अनिल कुमार सिंह चाहर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, जाट आरक्षण संघर्ष समिति के जिला अध्यक्ष व वर्तमान में अखिल भारतीय जाट आरक्षण संघर्ष समिति के राष्ट्रीय सचिव हैं। आपने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री यशपाल मलिक जी को अपूर्व सहयोग दिया। श्रीतेज सिंह वर्मा सैनिगा वरिष्ठ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं। संपूर्ण जीवन शिक्षा, समाजसेवा तथा भ्रष्टाचार के विरोध में व्यतीत किया। सर्वजन सुखाय–सर्वजन हिताय चाहरखाटी महासंघ के अध्यक्ष हैं। जाट आरक्षण की प्राप्ति में मुख्य संरक्षक तथा मार्गदर्शक–निर्देशक की भूमिका में रहे। आज भी युवाओं से भी अधिक जोश है। विधानसभा–लोकसभा चुनावों में सारे भारत में अपने सहयोगी शिक्षाविद् प्रोफेसर डा. दुर्गपाल सिंह सोलंकी, चुनाव रणनीति विशेषज्ञ के साथ अभियानों में कीर्तिमान स्थापित किया है। श्री भंवर सिंह मनकौड़ा के पुत्र थी सियाराम सिंह फौजदार ''सैनिक'' व ''अमर उजाला'' आगरा समाचारपत्रों में संपादक की भूमिका में रहे। शिखा व समाज सेवा में सक्रिय योगदान किया। ''देहाती'' समाचार पत्र केसंस्थापक संपादक थे। कुंडौल के रणजीत सिंह आर्य भारतीय लोकदल के आगरा जिलाध्यक्ष रहे, शिक्षा व समाज सेवा में सक्रिय हैं। ठा. उल्फतसिंह चौहान उत्तर प्रदेश विधानसभा के सदस्य तथा आगरा जिला परिषद के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए थे।

किसान जनता की क्रांतिकारी भूमिका और देशभक्ति के लिये बलिदान की तत्परता का ज्वलंत उदाहरण है– बड़ौदा ग्राम का लगानबंदी आंदोलन! आंदोलन में बड़ौदा के ठा. भंवर सिंह सोलंकी के पुत्र श्री फूलसिंह जी व बेटी चंपावती जी ने आगरा जिले की अन्य बहिनों के साथ सक्रियता से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। श्रीमती चंपावती देवी को दो बार आगरा की फतेहपुर सम्मानित किया। आपकी शादी रोझौली के श्रीमेजर लक्ष्मण सिंह जी के साथ हुई। उनके पुत्र वर्तमान में सैकड़ों किसानों के शरीरों पर लाठी बैंलों तथा घोड़ों की टापों के निशान देखे जा सकते थे। वर्तमान में ऐसे किसान बहुत कम बचे हैं। भारत के स्वाधीनता आंदोलन में बड़ौदा का लगानबंदी आंदोलन–सत्याग्रह स्वर्णक्षरों में अंकित है। आगरा के एक नेता श्री श्री कृष्णदत्त पालीवाल को इसी ग्राम के आंदोलन ने नेता बना दिया था। बड़ौदा गांव के अनेक किसानों के सामने बड़े–बड़े नेताओं का त्याग भी फीका पड़ जाता है। श्री फूलसिंह के पुत्र श्री महेंद्रसिंह सोलंकी प्रख्यात लोक कवि हैं और उनकी एक अनुपम कविता महानतम क्रांतिकारी विश्व सरकार के प्रणेता भारत की प्रथम स्वतंत्र अस्थायी राष्ट्रीय सरकार के राष्ट्रपति, रातर्षि राजा महेंद्र प्रताप जी को समर्पित है। –उनकी वाणी में :–

''जीवन ज्योति जगाने वाले, पहन लिया केसरिया बाना।
आया है कुछेक करके जाना, छोड़ा राज महल और ठौर ठिकाना।।

द्वारे–द्वारे अलख जगाया, इंकलाब जिंदा की बोली।
आजादी के हम दीवाने, भर दो भारत मां की झोली।।
पग–पग चलकर धरती नापी, पगडंडी की राह से।
कैसर, पाशा हाथ मिलाते, लेकिन हंस कर चाह से।।
काशी, काबा, बैतुलहम में घूम–घूम कर आया है।
राम, रसूल, बुद्ध, ईसा में, एक ही जलवा पाया है।।
गांधी, सुभाष का अग्रदूत, भारत मां का गौरव है।
जाति, देश, भूखण्ड, राष्ट्र सब नाम–रूप का भेद है।।

लेखक प्रो. अरुणप्रताप के बड़े भाई कुंवर प्रवीण प्रताप सिंह (स्वर्गीय) ने सत्याग्रहियों के सम्मान में एक कविता लिखी है जो आगामी अंक में प्रकाशित होगी। बड़े भाई प्रो. सुधीर प्रताप सोलंकी जीवित सत्याग्रहियों को अपने ऐतिहासिक गांव नगला जोधना में सम्मेलन आयोजित कर सम्मानित किया।

वे 10 वर्ष राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर एवं 32 वर्ष महाविद्यालय डिग्री कालेज के प्रिंसीपल पद पर रहे। लेखक प्रो. दुर्गापाल ने दिसंबर सन् 1984 के लोकसभा चुनाव अभियान के दिनों में बड़ौदा गांव में पहुंचकर श्रीमती चंपावती जी के पैतृक (मायका) निवास के सामने वह पोखर (तालाब) देखा और मन किया, जिसमें सत्याग्रहियों को पुलिस फैंक देती थी और वे गर्व से सीना फैलाकर ''इन्कलाब जिंदाबाद'' का नारा बुलंद करते हुए बाहर निकलते थे। धन्य है– बड़ौदा गांव और वहां के वीर–बहादुर किसान, जिन्होंने हिंदुस्तान में आजादी का बिगुल बजा दिया। बड़ौदा में वर्तमान में प्रतिवर्ष इसी स्मृति में भव्य मेला लगता है और हजारों–लाखों की संख्या में नर–नारियां, स्वतंत्रता सेनानी, राजनैतिक दलों के नेतागण, शिक्षक, लेखक, कवि कलाकार, किसान–मजदूर, संस्कृति कर्मो सम्मिलित होते हैं।

यहां उल्लेखनीय है कि इतिहासविद् लेखक प्रो. कुंवर अरुण प्रताप सिंह ''चमन'' ने अपने ऐतिहासिक पैतृक गांव नगला जोघना–कागारौल, जिला आगरा में जाट आरक्षण संघर्ष समिति के बैनर तले विशाल सम्मेलनों का आयोजन किया। जिला आकरा के सभी महत्वपूर्ण गांव व कस्बों, उत्तर प्रदेश व निकटवर्ती राजस्थान, हरियाणा व मध्यप्रदेश के जिलों में जाट आरक्षण संघर्ष–संकल्प यात्रा में अपना सक्रिय योगदान प्रदान किया। प्रोफेसर प्रशासक ठा. दलीप सिंह प्रथम सैक्रेटरी, आगरा डिस्टिक्ट बोर्ड के पौत्र एवं ठा. देवेंद्र सिंह जी के पुत्र हैं। वे उच्च कोटि के राजनीतिक विचारक वर्तमान में जाट बोर्डिंग हाउस में महाराजा सूरजमल इंटर कालेज संचालित है। यह स्थान आगरा का हृदय स्थल है। इतिहासकार व समाजशास्त्री हैं। किसान–मसीहा प्रधानमंत्री चौ. चरण सिंह के संवैधानिक सलाहकार थे।

सत्संग

—नरेंद्र आहूजा

सत्संग वह परम पवित्र तीर्थ है जिससे मन शुद्ध पवित्र और सात्विक बनता है। सत्संग मनुष्य के मन को विषय विकारों से हटा कर प्रभु की ओर प्रेरित करते हुए जीवन को निर्मल करता है। वेद भगवान ने भी जानता सं गमेमहि। क्र. 5/51/15 कहकर मनुष्यों को आदेश दिया कि हम ज्ञानी लोगों का सत्संग करें। हम जिस प्रकार की संगति में रहते हैं उससे हमारी पहचान बनती है। पाश्चात्य विद्वान गेरे ने कहा कि आप मुझे बताइये आपके संगी साथी कौन हैं और मैं बता दूंगा कि आप कौन हैं। हम अपने संगी साथियों से पहचाने जाते हैं। जिस प्रकार यज्ञ की पवित्र अग्नि में आहूत की गई समिधा अग्निस्वरूप होकर यज्ञ की अग्नि को बढ़ाती है उसी प्रकार ज्ञानियों के सत्संग से मूर्ख भी ज्ञानी बन जाता है। वहीं यदि समिधा को दीमक के पानी में छोड़ दिया जाये तो वह अंदर से खोखली हो जाती है उसी प्रकार मूर्खों दुष्टों की संगत से मनुष्य भी अधोगति को प्राप्त होता है और अपने विनाश की ओर अग्रसर हो जाता है।

एक बार राजा बलि से किसी ने पूछा आप मूर्खों दुष्टों के साथ स्वर्ग में रहना पसंद करोगे या फिर सज्जनों ज्ञानियों के साथ नरक में तो राजा बलि ने बहुत सुंदर उत्तर दिया मुझे सज्जनों के साथ नरक में रहना पसंद है क्योंकि ज्ञानी सज्जन अपने व्यवहार पुरुषार्थ से नरक को भी स्वर्ग बना देंगे जबकि मूर्ख दुष्ट अपनी दुष्टता से स्वर्ग को नरक बनाने से ज्यादा देर नहीं लगायेंगे।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने सत्संग की महिमा का गुणगान करते हुए बहुत सुंदर बात कही–

सठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परस कुधातु सुहाई।।

अर्थात जिस प्रकार पारस पत्थर के छूने से लोहा सोना हो जाता है उसी प्रकार श्रेष्ठ पुरुषों के संग से मूर्ख भी सुधर जाते हैं। सत्संग के प्रभाव से कितने मूर्ख शठ इतिहास प्रसिद्ध विद्वान बन गए। विषयों में फंसे तुलसीदास भी अपनी पत्नी के सत्संग से महात्मा तुलसीदास बने। जब कुछ पंडितों ने मूर्ख कालिदास का विवाह विदूषी विद्योतमा से करवा दिया और विद्योतमा ने उसकी मूर्खता जान कर उसे अपमानित करके निकाल दिया और अपमान से पीड़ित कालिदास विद्वानों के संग और स्वाध्याय के बल पर महाकवि बन गए। वेश्यागामी तहसीलदार अमीचंद महर्षि दयानंद के सत्संग और "अमीचंद तुम हो तो हीरा पर कीचड़ में पड़े हो" कहने से जीवन परिवर्तित होकर भजनोपदेशक महात्मा अमीचंद बन गए। मांसाहारी पटवारी फूलसिंह आर्य समाज के सत्संग के प्रभाव से महात्मा फूलसिंह बन गए।

सत्संग की महिला का बखान करते हुए भी भर्तृहरि जी ने बड़े सुंदर ढंग से कहा है सत्संग बुद्धि की जड़ता को हरता है, वाणी में सत्य का संचार करता है, सम्मान बढ़ाता है, पाप को दूर करता है, चित्त को आनंदित करता है और समस्त दिशाओं में कीर्ति का विस्तार करता है। सदाचारी सज्जनों की संगति मनुष्य का सब प्रकार का उपकार करती है। सत्संग की महिमा का गुणगान वेदों में भी है दूरे पूर्णेन वसति दूर उनेन हीयते। अथर्व 10/8/15 अर्थात विद्वानों, योगियों, महात्माओं के साथ रहने से मनुष्य उन्नत होता है और आचारहीन लोगों के संपर्क में रहने से गिर कर पतित हो जाता है। महर्षि नारद महत्संगस्तु दुर्लभीगम्योमीधश्च। भक्तिसूत्र में स्पष्ट कहते हैं महापुरुषों का संग दुर्लभ अपार महत्व वाला और कभी निष्फल नहीं जाने वाला बताते हैं।

चंदन शीतल है चंद्रमा उससे भी अधिक शीतल है परंतु सत्संग सज्जनों का संग उससे भी अधिक शीतलता प्रदान करता है। वैसे भी दुष्टों की संगति से कष्ट निश्चित है जैसे कीकर के वृक्ष के नीचे तो कांटा ही चुभता है इसीलिए दुष्टों से दूर रहो और सज्जनों का संग करो। संग तरे अर्थात सज्जनों का संग मनुष्य को संसार के भव सागर से पार उतार देता है। यदि महान बनना चाहो तो सज्जनों का संग करना चाहिए।

जाहि बड़ाई चाहिये, तजै न उत्तम साथ।
ज्यों पलास संग पान के, पहुंचे राजा हाथ।।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।